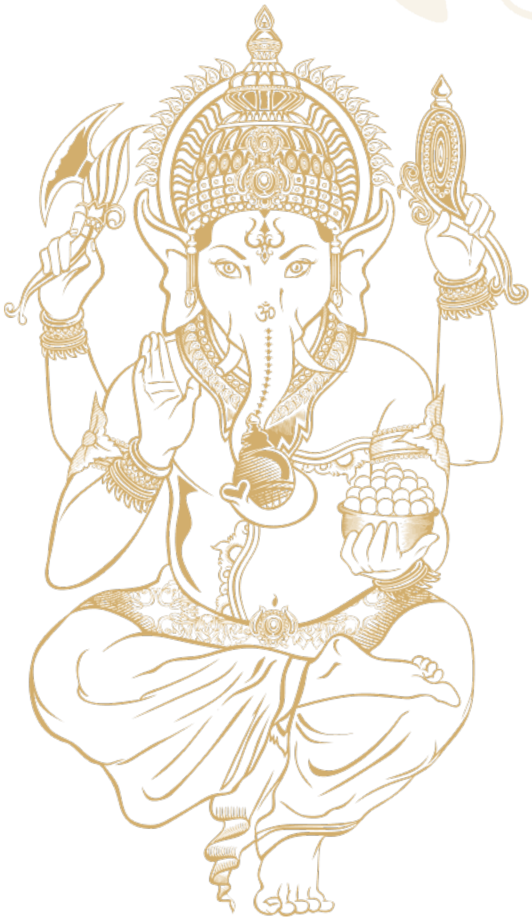

BHAVAYA GUPTA

RASHI GUPTA

Model: Web-MatchAnalysis

Order No: 121265001

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
28/01/1995	जन्म तिथि	15-16/02/1995
शनिवार	दिन	बुध-गुरुवार
घंटे 13:00:00	जन्म समय	03:35:00 घंटे
घटी 14:32:40	जन्म समय(घटी)	51:29:04 घटी
India	देश	India
Ghaziabad	स्थान	Aligarh
28:40:08 उत्तर	अक्षांश	27:53:50 उत्तर
77:27:08 पूर्व	रेखांश	78:05:50 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:20:11	स्थानिक संस्कार	-00:17:37 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:10:56	सूर्योदय	06:55:54
17:54:38	सूर्यास्त	18:07:59
23:47:30	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:33

वृष	लग्न	धनु
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
धनु	राशि	सिंह
गुरु	राशि-स्वामी	सूर्य
मूल	नक्षत्र	मघा
केतु	नक्षत्र स्वामी	केतु
3	चरण	3
व्याघात	योग	अतिगण्ड
गर	करण	बालव
भा-भारत	जन्म नामाक्षर	मू-मुक्ता
कुम्भ	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	वनचर
श्वान	योनि	मूषक
राक्षस	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 2वर्ष 5मा 11दि		07:05:40	वृष	लग्न	धनु	07:36:20	केतु 2वर्ष 9मा 18दि	
चन्द्र		14:06:41	मक	सूर्य	कुंभ	02:58:00	चन्द्र	
10/07/2023		08:40:22	धनु	चंद्र	सिंह	07:59:53	05/12/2023	
10/07/2033		04:38:37	सिंह व	मंगलव	कर्क	27:35:49	05/12/2033	
चन्द्र	10/05/2024	26:59:13	मक व	बुध व	मक	11:50:02	चन्द्र	05/10/2024
मंगल	09/12/2024	15:57:05	वृश्चि	गुरु	वृश्चि	18:38:53	मंगल	06/05/2025
राहु	10/06/2026	27:52:08	वृश्चि	शुक्र	धनु	18:46:34	राहु	05/11/2026
गुरु	10/10/2027	16:51:53	कुंभ	शनि	कुंभ	19:00:33	गुरु	06/03/2028
शनि	10/05/2029	16:49:30	तुला व	राहु व	तुला	14:28:46	शनि	05/10/2029
बुध	09/10/2030	16:49:30	मेष व	केतु व	मेष	14:28:46	बुध	06/03/2031
केतु	10/05/2031	03:17:00	मक	हर्ष	मक	04:19:49	केतु	05/10/2031
शुक्र	08/01/2033	29:48:20	धनु	नेप	मक	00:27:46	शुक्र	05/06/2033
सूर्य	10/07/2033	06:27:29	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	06:44:05	सूर्य	05/12/2033

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:47:30 चित्रपक्षीय अयनांश 23:47:33

लग्न-चलित

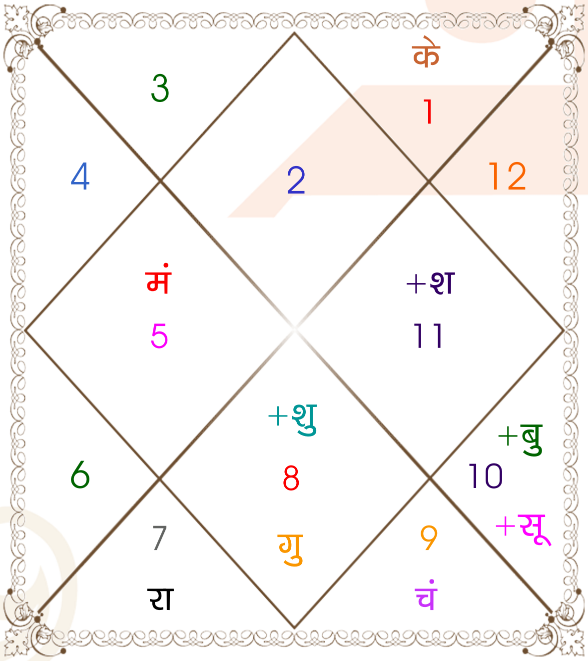

लग्न-चलित

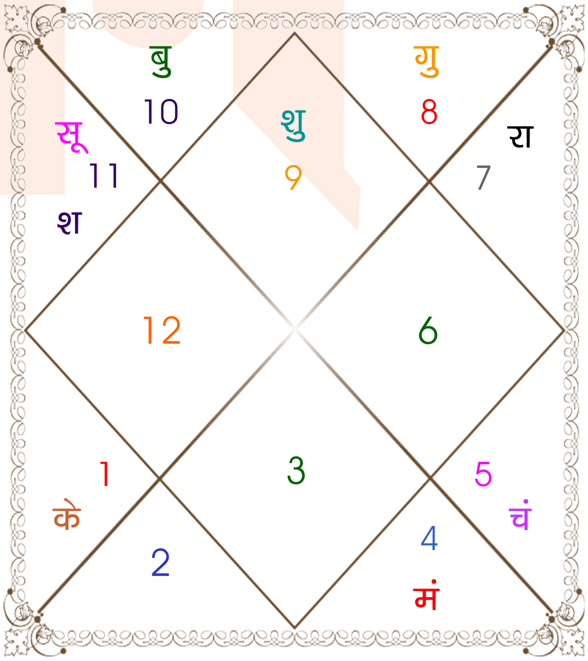

चलित अंश

भाव मध्य		भाव संधि		भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
वृष	07:05:40	मेष	19:22:38	1	वृश्चि	25:02:54	धनु	07:36:20
मिथु	01:39:35	वृष	19:22:38	2	धनु	25:02:54	मक	12:29:28
मिथु	26:13:30	मिथु	13:56:33	3	मक	29:56:02	कुंभ	17:22:36
कर्क	20:47:25	कर्क	08:30:28	4	मीन	04:49:10	मीन	22:15:45
सिंह	26:13:30	सिंह	08:30:28	5	मेष	04:49:10	मेष	17:22:36
तुला	01:39:35	कन्या	13:56:33	6	मेष	29:56:02	वृष	12:29:28
वृश्चि	07:05:40	तुला	19:22:38	7	वृष	25:02:54	मिथु	07:36:20
धनु	01:39:35	वृश्चि	19:22:38	8	मिथु	25:02:54	कर्क	12:29:28
धनु	26:13:30	धनु	13:56:33	9	कर्क	29:56:02	सिंह	17:22:36
मक	20:47:25	मक	08:30:28	10	कन्या	04:49:10	कन्या	22:15:45
कुंभ	26:13:30	कुंभ	08:30:28	11	तुला	04:49:10	तुला	17:22:36
मेष	01:39:35	मीन	13:56:33	12	तुला	29:56:02	वृश्चि	12:29:28

तारा चक्र

मघा	अश्विनी	मूल	**जन्म**	मघा	मूल	अश्विनी
पू०फाल्गुनी	भरणी	पूर्वाषाढ़ा	**सम्पत**	पू०फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	भरणी
उ०फाल्गुनी	कृतिका	उत्तराषाढ़ा	**विपत**	उ०फाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा	कृतिका
हस्त	रोहिणी	श्रवण	**क्षेम**	हस्त	श्रवण	रोहिणी
चित्रा	मृगशिरा	धनिष्ठा	**प्रत्यारि**	चित्रा	धनिष्ठा	मृगशिरा
स्वाति	आर्द्रा	शतभिषा	**साधक**	स्वाति	शतभिषा	आर्द्रा
विशाखा	पुनर्वसु	पू०भाद्रपद	**वध**	विशाखा	पू०भाद्रपद	पुनर्वसु
अनुराधा	पुष्य	उ०भाद्रपद	**मित्र**	अनुराधा	उ०भाद्रपद	पुष्य
ज्येष्ठा	आश्लेषा	रेवती	**अतिमित्र**	ज्येष्ठा	रेवती	आश्लेषा

चलित कुंडली

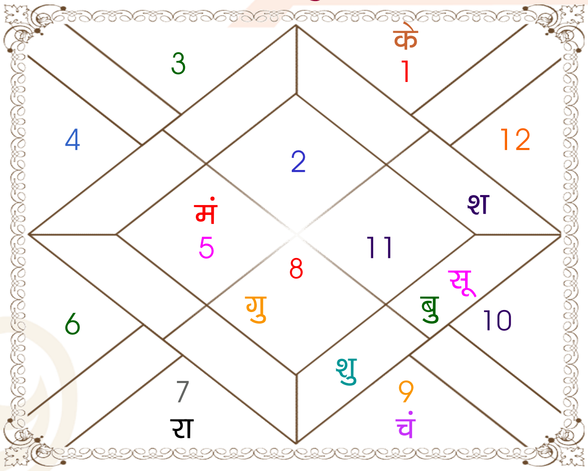

चलित कुंडली

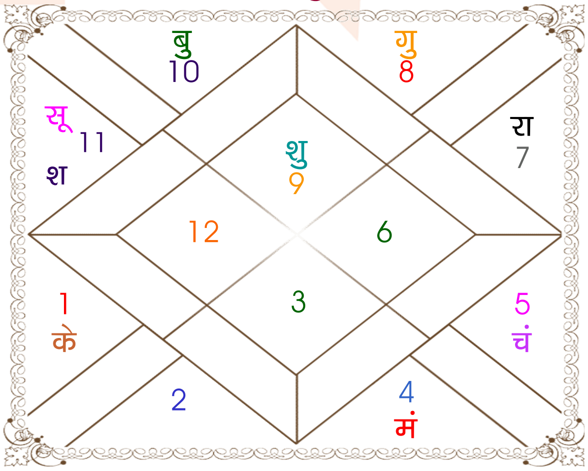

चन्द्र कुंडली

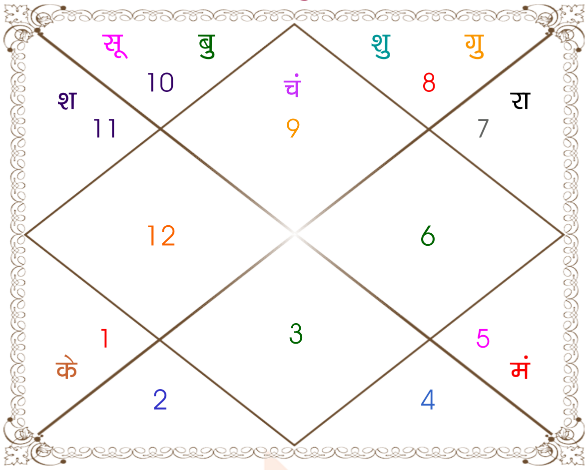

चन्द्र कुंडली

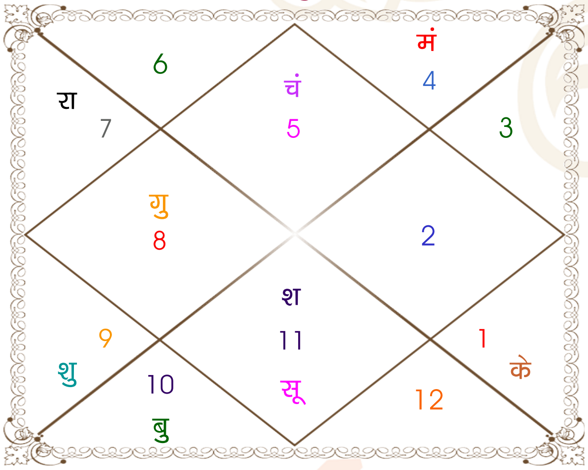

सूर्य कुंडली

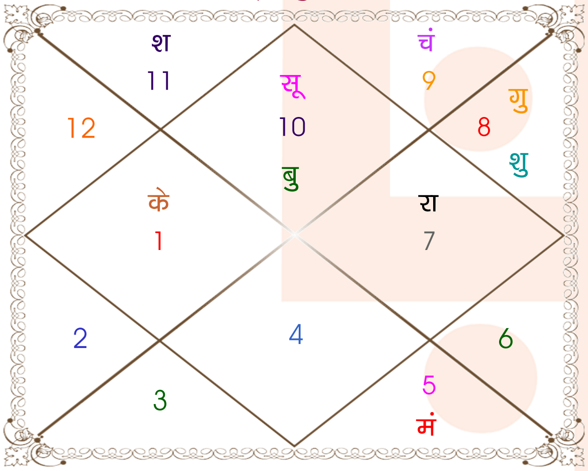

सूर्य कुंडली

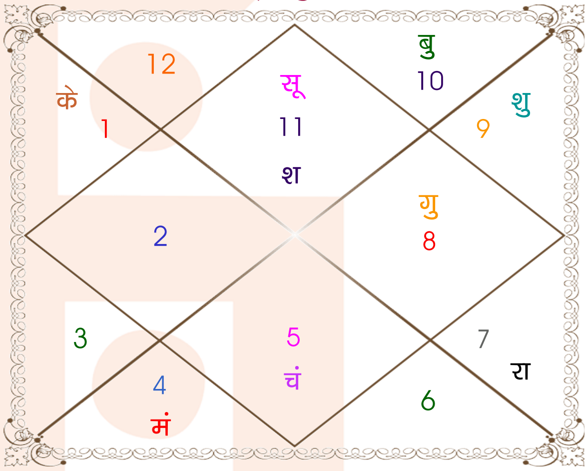

नवमांश कुंडली

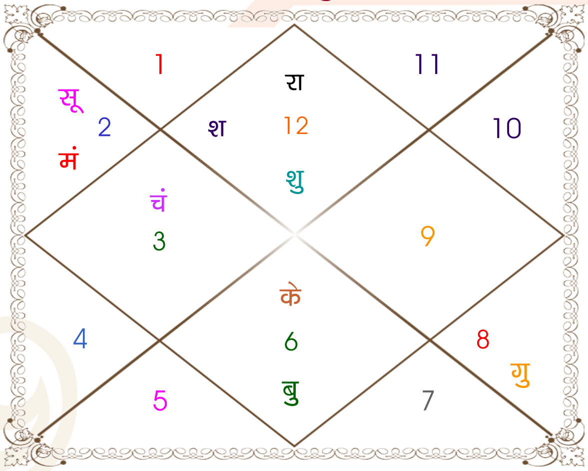

नवमांश कुंडली

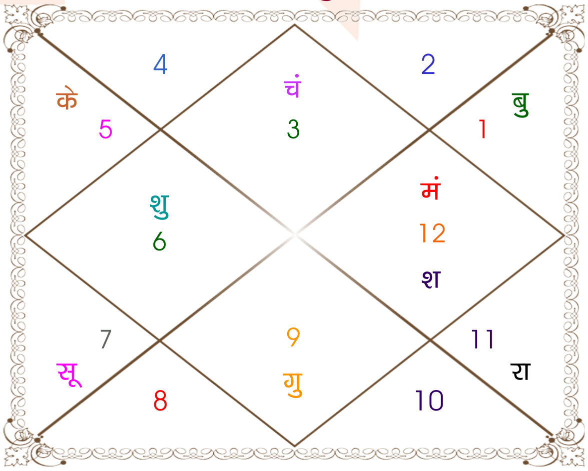

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

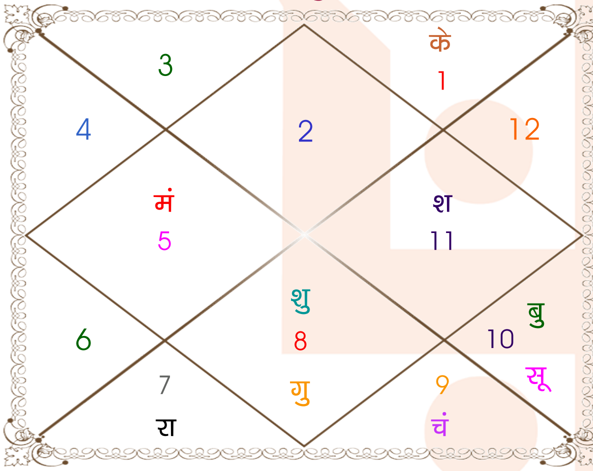

देह विचारः

लग्न कुंडली

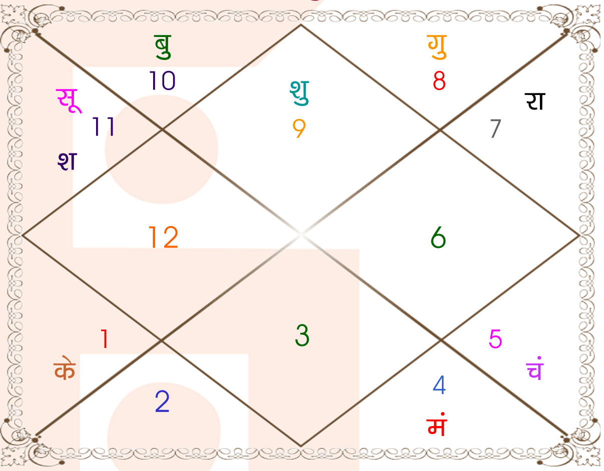

देह विचारः

होरा कुंडली

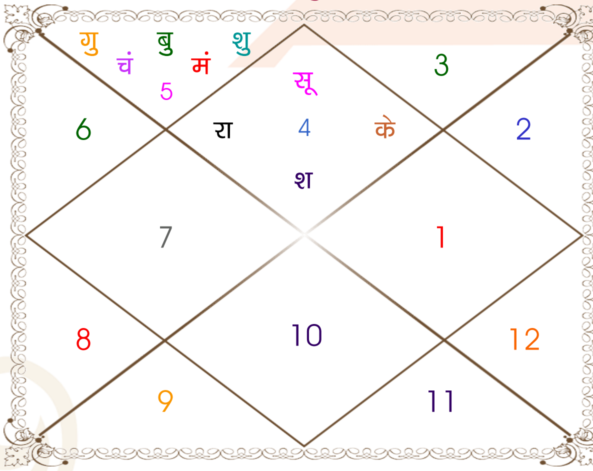

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

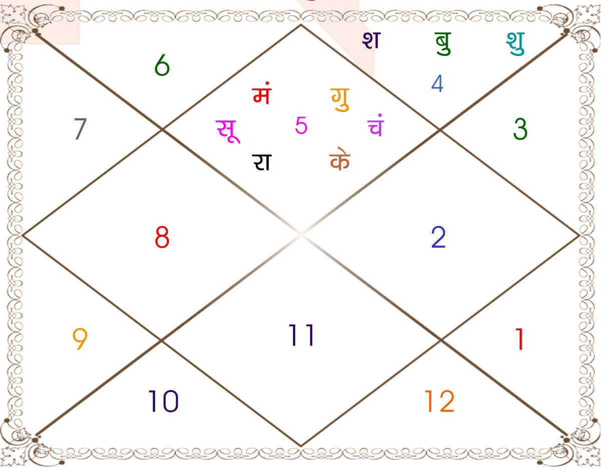

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

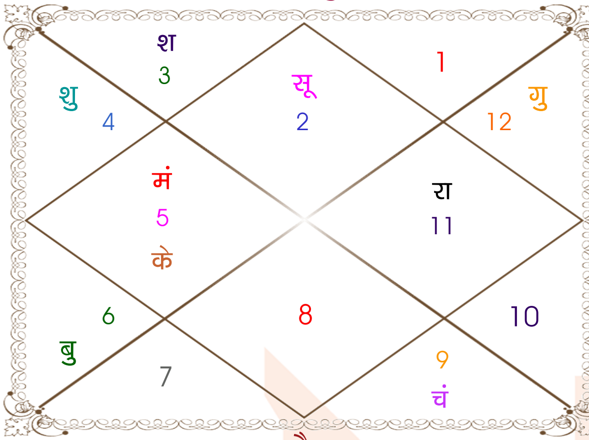

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

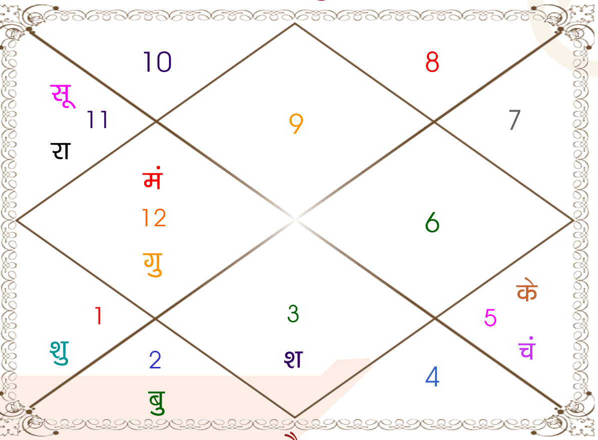

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

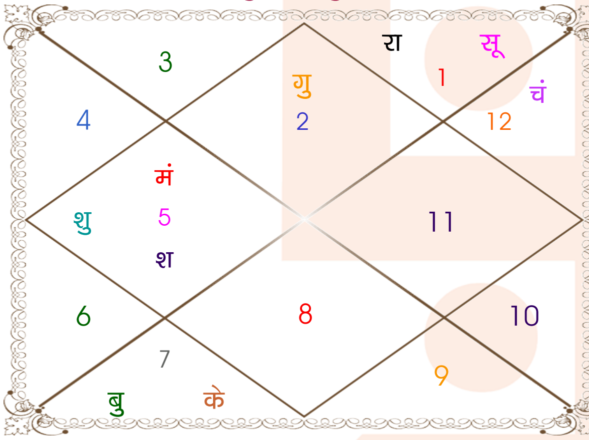

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

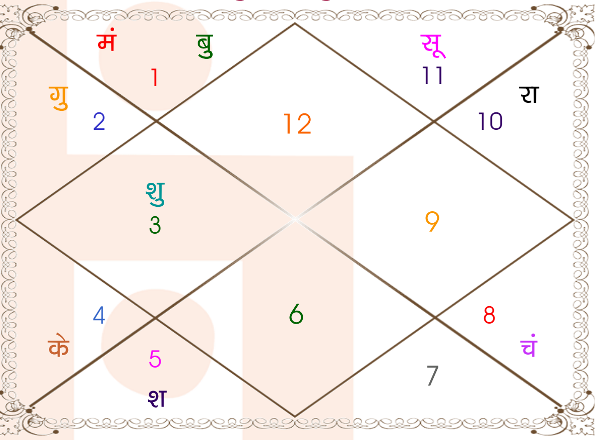

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

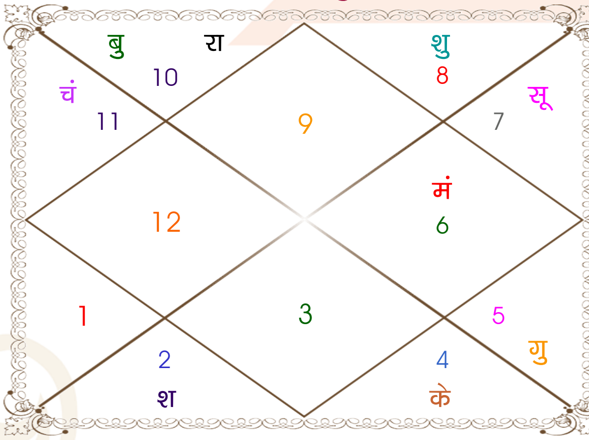

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

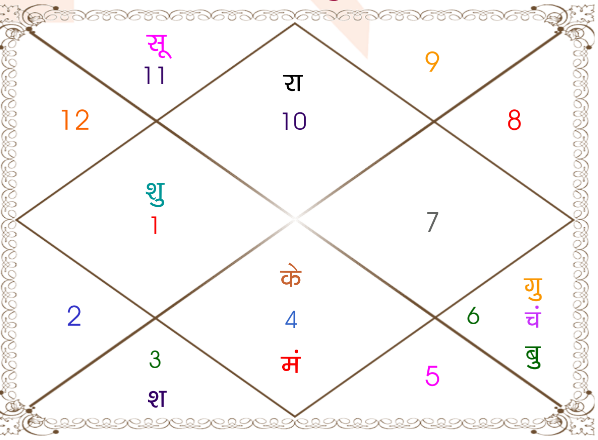

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

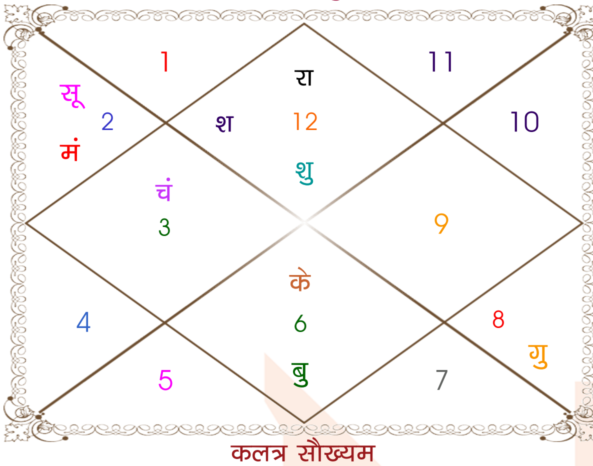

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

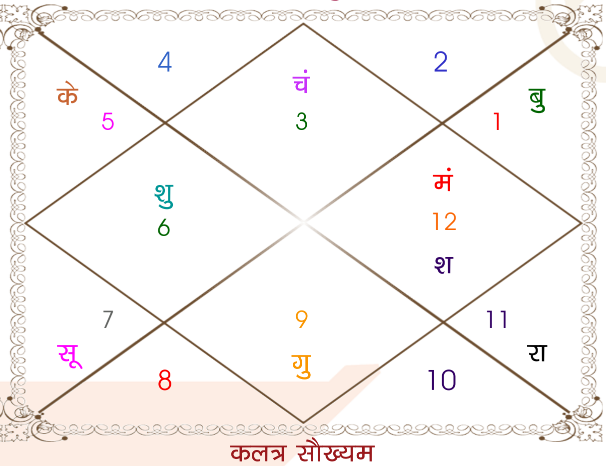

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

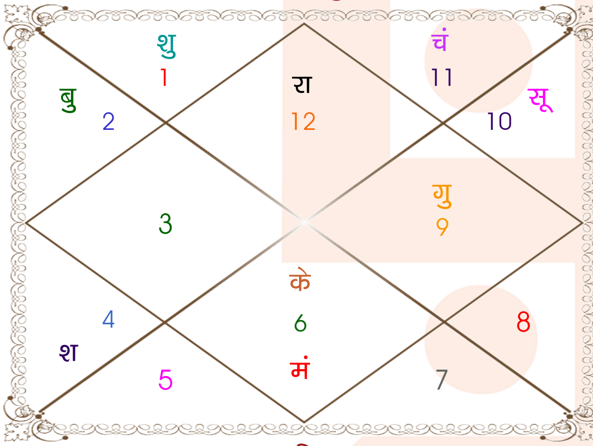

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

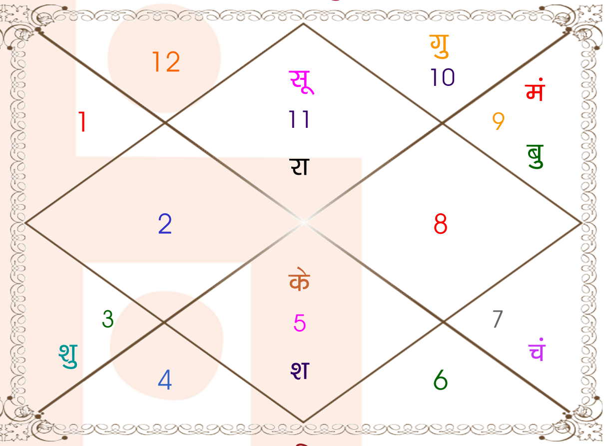

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

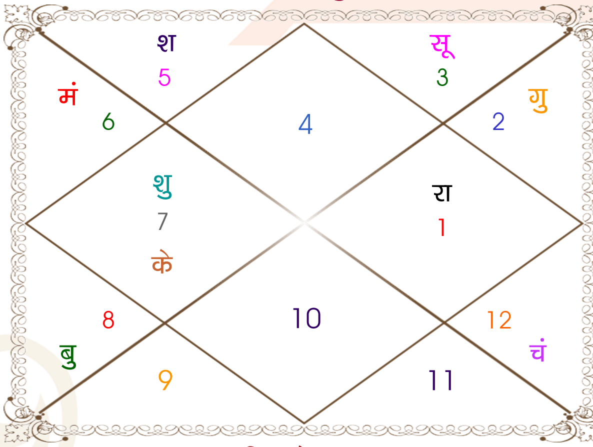

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

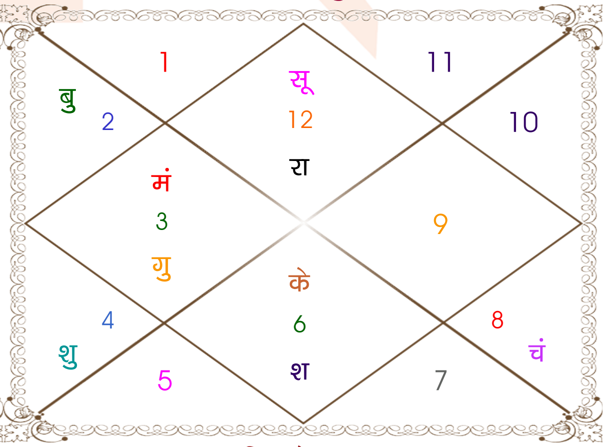

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

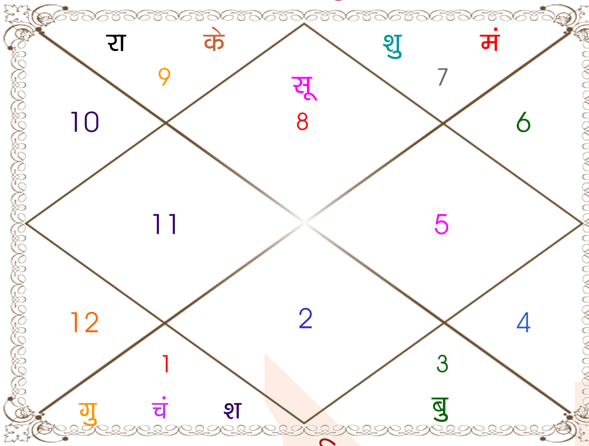

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

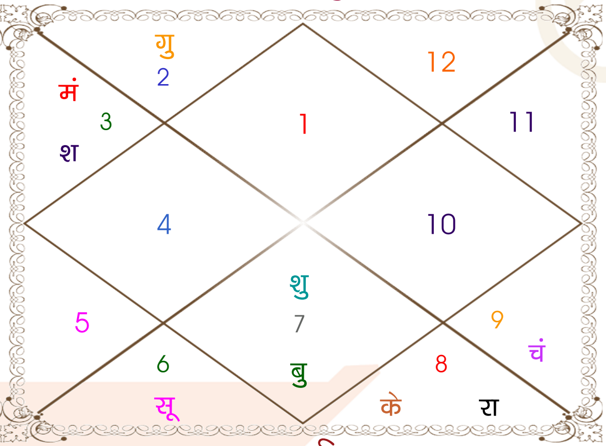

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

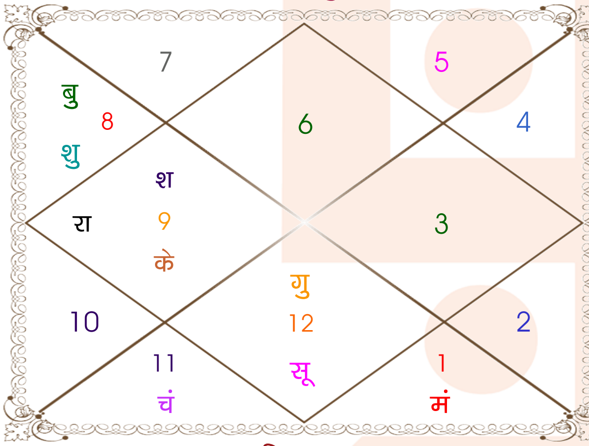

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

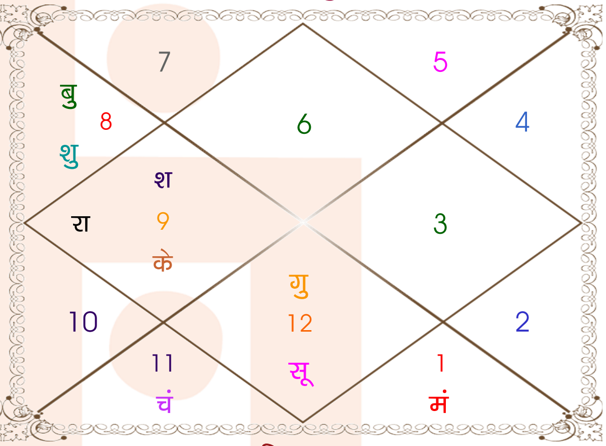

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

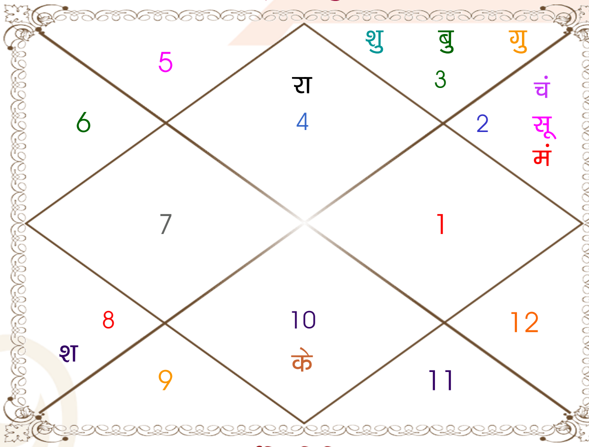

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

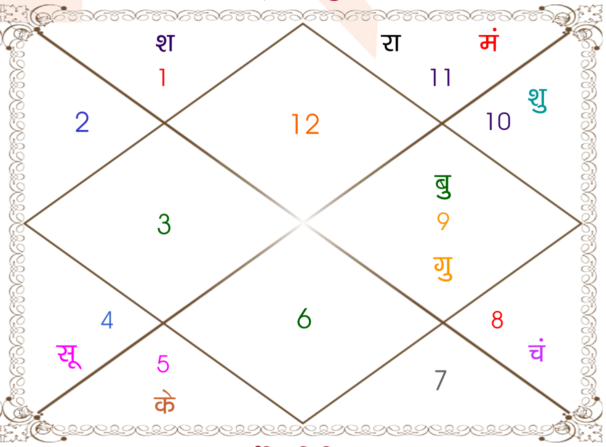

सर्वास्थितिविचारः

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 4 मास 20 दिन

के.पी. अयनांश : 23:41:04

फॉरच्युना : मेष 01:45:47

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	14:13:08	शनि	चंद्र	गुरु	शनि
चंद्र		धनु	08:46:48	गुरु	केतु	गुरु	सूर्य
मंगल	व	सिंह	04:45:04	सूर्य	केतु	चंद्र	सूर्य
बुध	व	मक	27:05:39	शनि	मंगल	गुरु	शुक्र
गुरु		वृश्चि	16:03:32	मंगल	शनि	गुरु	शुक्र
शुक्र		वृश्चि	27:58:35	मंगल	बुध	शनि	शनि
शनि		कुंभ	16:58:19	शनि	राहु	शुक्र	शनि
राहु	व	तुला	16:55:56	शुक्र	राहु	शुक्र	शनि
केतु	व	मेष	16:55:56	मंगल	शुक्र	चंद्र	बुध
हर्ष		मक	03:23:27	शनि	सूर्य	शनि	बुध
नेप		धनु	29:54:46	गुरु	सूर्य	राहु	शनि
प्लूटो		वृश्चि	06:33:55	मंगल	शनि	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	07:12:07	शुक्र	सूर्य	केतु	सूर्य
2	मिथु	02:48:07	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र
3	मिथु	25:59:59	बुध	गुरु	केतु	चंद्र
4	कर्क	20:53:52	चंद्र	बुध	शुक्र	शनि
5	सिंह	21:03:23	सूर्य	शुक्र	गुरु	शुक्र
6	कन्या	28:08:29	बुध	मंगल	शनि	शनि
7	वृश्चि	07:12:07	मंगल	शनि	बुध	शनि
8	धनु	02:48:07	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
9	धनु	25:59:59	गुरु	शुक्र	केतु	शुक्र
10	मक	20:53:52	शनि	चंद्र	शुक्र	सूर्य
11	कुंभ	21:03:23	शनि	गुरु	गुरु	शुक्र
12	मीन	28:08:29	गुरु	बुध	शनि	शनि

भाव कुंडली

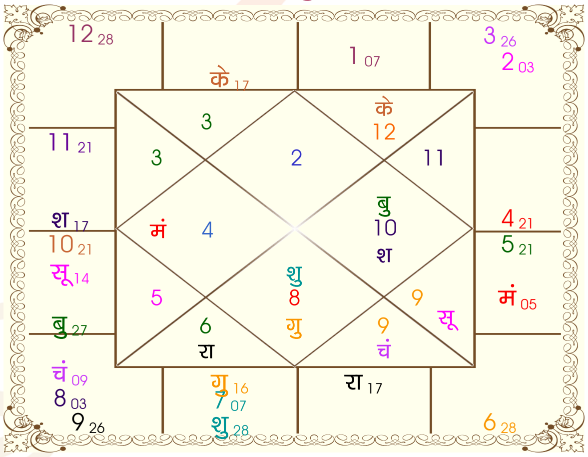

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 8 मास 28 दिन

के.पी. अयनांश : 23:41:06

फॉरच्युना : मिथुन 12:44:39

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	03:04:26	शनि	मंगल	शुक्र	सूर्य
चंद्र		सिंह	08:06:19	सूर्य	केतु	गुरु	बुध
मंगल	व	कर्क	27:42:16	चंद्र	बुध	गुरु	राहु
बुध	व	मक	11:56:28	शनि	चंद्र	राहु	राहु
गुरु		वृश्चि	18:45:20	मंगल	बुध	केतु	सूर्य
शुक्र		धनु	18:53:00	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
शनि		कुंभ	19:07:00	शनि	राहु	चंद्र	शुक्र
राहु	व	तुला	14:35:12	शुक्र	राहु	केतु	शुक्र
केतु	व	मेष	14:35:12	मंगल	शुक्र	शुक्र	गुरु
हर्ष		मक	04:26:15	शनि	सूर्य	शनि	मंगल
नेप		मक	00:34:13	शनि	सूर्य	राहु	शुक्र
प्लूटो		वृश्चि	06:50:31	मंगल	शनि	बुध	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	07:42:46	गुरु	केतु	गुरु	गुरु
2	मक	11:46:38	शनि	चंद्र	मंगल	शुक्र
3	कुंभ	18:28:18	शनि	राहु	चंद्र	गुरु
4	मीन	22:22:11	गुरु	बुध	चंद्र	मंगल
5	मेष	20:37:47	मंगल	शुक्र	गुरु	शनि
6	वृष	14:44:00	शुक्र	चंद्र	गुरु	केतु
7	मिथु	07:42:46	बुध	राहु	राहु	बुध
8	कर्क	11:46:38	चंद्र	शनि	चंद्र	बुध
9	सिंह	18:28:18	सूर्य	शुक्र	राहु	गुरु
10	कन्या	22:22:11	बुध	चंद्र	शुक्र	बुध
11	तुला	20:37:47	शुक्र	गुरु	गुरु	बुध
12	वृश्चि	14:44:00	मंगल	शनि	राहु	चंद्र

भाव कुंडली

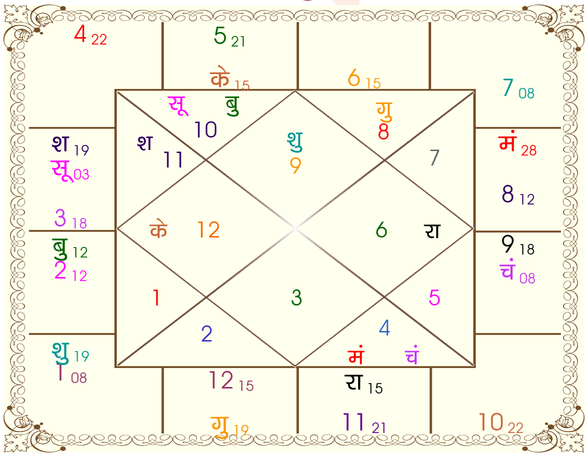

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- केतु-
2	बुध- शुक्र-
3	बुध- शुक्र-
4	सूर्य- चंद्र- मंगल, बुध,
5	सूर्य-
6	बुध- शुक्र- शनि, राहु+
7	मंगल- बुध- गुरु, शुक्र, केतु,
8	सूर्य, चंद्र, गुरु-
9	सूर्य, गुरु-
10	बुध, गुरु+ शुक्र, शनि,
11	गुरु- शनि-
12	चंद्र, मंगल, गुरु- केतु,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	गुरु- शुक्र+ केतु,
2	सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि-
3	शनि,
4	चंद्र, गुरु- केतु,
5	सूर्य- मंगल-
6	शुक्र, केतु-
7	मंगल- बुध- गुरु-
8	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध+
9	सूर्य-
10	मंगल- बुध- गुरु- शनि, राहु+
11	शुक्र, केतु-
12	सूर्य- मंगल- गुरु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 8, 9,
चंद्र	4- 8, 12,
मंगल	4, 7- 12,
बुध	2- 3- 4, 6- 7- 10,
गुरु	7, 8- 9- 10+ 11- 12-
शुक्र	1- 2- 3- 6- 7, 10,
शनि	6, 10, 11-
राहु	6+
केतु	1- 7, 12,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2, 5- 8, 9- 12-
चंद्र	4, 8,
मंगल	2, 5- 7- 8, 10- 12-
बुध	2, 7- 8+ 10-
गुरु	1- 2, 4- 7- 10- 12,
शुक्र	1+ 6, 11,
शनि	2- 3, 10,
राहु	10+
केतु	1, 4, 6- 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

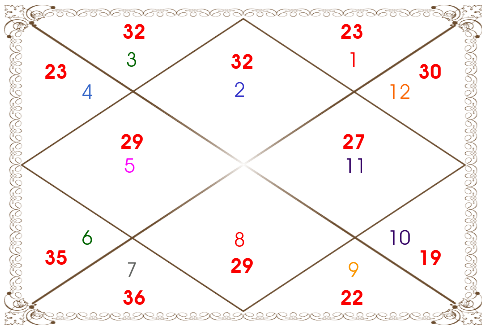

सर्वाष्टकवर्ग

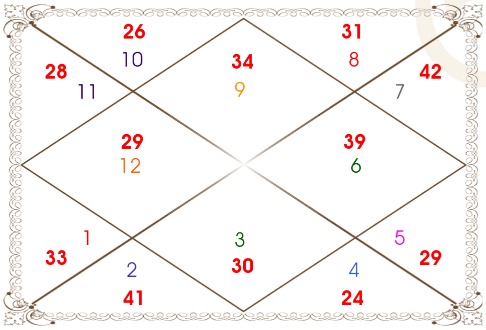

BHAVAYA GUPTA

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	3	4	3	3	7	2	3	2	3	2	39
गुरु	5	4	6	3	6	6	4	5	2	6	5	4	56
मंगल	2	6	4	1	3	4	6	4	1	0	4	4	39
सूर्य	5	5	2	3	4	6	6	4	2	1	5	5	48
शुक्र	3	3	6	5	5	5	3	6	5	4	2	5	52
बुध	2	6	6	2	3	7	5	5	5	3	4	6	54
चंद्र	2	5	5	5	5	4	5	3	4	3	4	4	49
बिन्दु	23	32	32	23	29	35	36	29	22	19	27	30	337
रेखा	33	24	24	33	27	21	20	27	34	37	29	26	335

RASHI GUPTA

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	6	6	2	5	3	3	4	4	5	4	5	2	49
सूर्य	2	7	3	2	3	5	6	5	3	2	4	6	48
चंद्र	5	5	4	3	6	5	5	4	3	2	4	3	49
मंगल	3	5	3	3	3	3	6	4	3	2	3	1	39
बुध	3	5	4	4	3	5	7	3	5	6	3	6	54
गुरु	7	6	5	2	5	6	5	3	4	6	5	2	56
शुक्र	4	3	5	4	4	7	4	4	6	3	2	6	52
शनि	3	4	4	1	2	5	5	4	5	1	2	3	39
बिन्दु	33	41	30	24	29	39	42	31	34	26	28	29	386
रेखा	31	23	34	40	35	25	22	33	30	38	36	35	382

शोध्य पिंड - BHAVAYA GUPTA

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	124	73	154	126	96	84	51
ग्रह पिंड	48	34	67	74	91	53	0
शोध्य पिंड	172	107	221	200	187	137	51

शोध्य पिंड - RASHI GUPTA

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	132	132	77	37	87	25	71	77
ग्रह पिंड	93	52	25	46	27	15	14	51
शोध्य पिंड	225	184	102	83	114	40	85	128

विंशोत्तरी दशा

केतु 2 वर्ष 5 मास 11 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
28/01/1995		10/07/1997		10/07/2017	
10/07/1997		10/07/2017		10/07/2023	
	00/00/0000	शुक्र	08/11/2000	सूर्य	27/10/2017
	00/00/0000	सूर्य	09/11/2001	चंद्र	28/04/2018
	00/00/0000	चंद्र	10/07/2003	मंगल	03/09/2018
	00/00/0000	मंगल	08/09/2004	राहु	29/07/2019
	00/00/0000	राहु	09/09/2007	गुरु	16/05/2020
	28/01/1995	गुरु	10/05/2010	शनि	28/04/2021
गुरु	04/06/1995	शनि	10/07/2013	बुध	04/03/2022
शनि	13/07/1996	बुध	10/05/2016	केतु	10/07/2022
बुध	10/07/1997	केतु	10/07/2017	शुक्र	10/07/2023

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
10/07/2023		10/07/2033		10/07/2040	
10/07/2033		10/07/2040		10/07/2058	
चंद्र	10/05/2024	मंगल	06/12/2033	राहु	23/03/2043
मंगल	09/12/2024	राहु	24/12/2034	गुरु	15/08/2045
राहु	10/06/2026	गुरु	30/11/2035	शनि	21/06/2048
गुरु	10/10/2027	शनि	08/01/2037	बुध	09/01/2051
शनि	10/05/2029	बुध	05/01/2038	केतु	27/01/2052
बुध	09/10/2030	केतु	03/06/2038	शुक्र	27/01/2055
केतु	10/05/2031	शुक्र	04/08/2039	सूर्य	22/12/2055
शुक्र	08/01/2033	सूर्य	09/12/2039	चंद्र	21/06/2057
सूर्य	10/07/2033	चंद्र	10/07/2040	मंगल	10/07/2058

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
10/07/2058		10/07/2074		10/07/2093	
10/07/2074		10/07/2093		11/07/2110	
गुरु	27/08/2060	शनि	13/07/2077	बुध	06/12/2095
शनि	11/03/2063	बुध	22/03/2080	केतु	03/12/2096
बुध	15/06/2065	केतु	01/05/2081	शुक्र	03/10/2099
केतु	22/05/2066	शुक्र	30/06/2084	सूर्य	10/08/2100
शुक्र	20/01/2069	सूर्य	12/06/2085	चंद्र	09/01/2102
सूर्य	09/11/2069	चंद्र	12/01/2087	मंगल	07/01/2103
चंद्र	11/03/2071	मंगल	20/02/2088	राहु	26/07/2105
मंगल	14/02/2072	राहु	27/12/2090	गुरु	01/11/2107
राहु	10/07/2074	गुरु	10/07/2093	शनि	11/07/2110

केतु 2 वर्ष 9 मास 18 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
16/02/1995		05/12/1997		05/12/2017	
05/12/1997		05/12/2017		05/12/2023	
	00/00/0000	शुक्र	05/04/2001	सूर्य	24/03/2018
	00/00/0000	सूर्य	05/04/2002	चंद्र	23/09/2018
	00/00/0000	चंद्र	05/12/2003	मंगल	29/01/2019
	00/00/0000	मंगल	03/02/2005	राहु	23/12/2019
	00/00/0000	राहु	04/02/2008	गुरु	11/10/2020
	16/02/1995	गुरु	05/10/2010	शनि	23/09/2021
गुरु	30/10/1995	शनि	05/12/2013	बुध	30/07/2022
शनि	08/12/1996	बुध	05/10/2016	केतु	05/12/2022
बुध	05/12/1997	केतु	05/12/2017	शुक्र	05/12/2023

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
05/12/2023		05/12/2033		04/12/2040	
05/12/2033		04/12/2040		05/12/2058	
चंद्र	05/10/2024	मंगल	03/05/2034	राहु	18/08/2043
मंगल	06/05/2025	राहु	21/05/2035	गुरु	10/01/2046
राहु	05/11/2026	गुरु	26/04/2036	शनि	16/11/2048
गुरु	06/03/2028	शनि	05/06/2037	बुध	06/06/2051
शनि	05/10/2029	बुध	02/06/2038	केतु	23/06/2052
बुध	06/03/2031	केतु	29/10/2038	शुक्र	24/06/2055
केतु	05/10/2031	शुक्र	30/12/2039	सूर्य	18/05/2056
शुक्र	05/06/2033	सूर्य	05/05/2040	चंद्र	16/11/2057
सूर्य	05/12/2033	चंद्र	04/12/2040	मंगल	05/12/2058

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
05/12/2058		05/12/2074		05/12/2093	
05/12/2074		05/12/2093		06/12/2110	
गुरु	22/01/2061	शनि	08/12/2077	बुध	02/05/2096
शनि	05/08/2063	बुध	17/08/2080	केतु	30/04/2097
बुध	10/11/2065	केतु	26/09/2081	शुक्र	28/02/2100
केतु	17/10/2066	शुक्र	25/11/2084	सूर्य	05/01/2101
शुक्र	17/06/2069	सूर्य	07/11/2085	चंद्र	06/06/2102
सूर्य	05/04/2070	चंद्र	09/06/2087	मंगल	04/06/2103
चंद्र	05/08/2071	मंगल	17/07/2088	राहु	21/12/2105
मंगल	11/07/2072	राहु	24/05/2091	गुरु	28/03/2108
राहु	05/12/2074	गुरु	05/12/2093	शनि	06/12/2110

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
09/12/2024		10/06/2026		10/10/2027	
10/06/2026		10/10/2027		10/05/2029	
राहु	01/03/2025	गुरु	13/08/2026	शनि	09/01/2028
गुरु	13/05/2025	शनि	30/10/2026	बुध	31/03/2028
शनि	08/08/2025	बुध	07/01/2027	केतु	04/05/2028
बुध	24/10/2025	केतु	04/02/2027	शुक्र	08/08/2028
केतु	25/11/2025	शुक्र	26/04/2027	सूर्य	06/09/2028
शुक्र	25/02/2026	सूर्य	21/05/2027	चंद्र	24/10/2028
सूर्य	24/03/2026	चंद्र	30/06/2027	मंगल	27/11/2028
चंद्र	09/05/2026	मंगल	29/07/2027	राहु	22/02/2029
मंगल	10/06/2026	राहु	10/10/2027	गुरु	10/05/2029

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
06/05/2025		05/11/2026		06/03/2028	
05/11/2026		06/03/2028		05/10/2029	
राहु	27/07/2025	गुरु	08/01/2027	शनि	05/06/2028
गुरु	08/10/2025	शनि	27/03/2027	बुध	26/08/2028
शनि	03/01/2026	बुध	04/06/2027	केतु	29/09/2028
बुध	21/03/2026	केतु	02/07/2027	शुक्र	03/01/2029
केतु	22/04/2026	शुक्र	21/09/2027	सूर्य	01/02/2029
शुक्र	23/07/2026	सूर्य	16/10/2027	चंद्र	21/03/2029
सूर्य	19/08/2026	चंद्र	25/11/2027	मंगल	24/04/2029
चंद्र	04/10/2026	मंगल	23/12/2027	राहु	20/07/2029
मंगल	05/11/2026	राहु	06/03/2028	गुरु	05/10/2029

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
10/05/2029		09/10/2030		10/05/2031	
09/10/2030		10/05/2031		08/01/2033	
बुध	22/07/2029	केतु	22/10/2030	शुक्र	20/08/2031
केतु	21/08/2029	शुक्र	26/11/2030	सूर्य	19/09/2031
शुक्र	16/11/2029	सूर्य	07/12/2030	चंद्र	09/11/2031
सूर्य	11/12/2029	चंद्र	25/12/2030	मंगल	15/12/2031
चंद्र	24/01/2030	मंगल	06/01/2031	राहु	15/03/2032
मंगल	23/02/2030	राहु	07/02/2031	गुरु	04/06/2032
राहु	11/05/2030	गुरु	07/03/2031	शनि	08/09/2032
गुरु	19/07/2030	शनि	10/04/2031	बुध	04/12/2032
शनि	09/10/2030	बुध	10/05/2031	केतु	08/01/2033

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
05/10/2029		06/03/2031		05/10/2031	
06/03/2031		05/10/2031		05/06/2033	
बुध	17/12/2029	केतु	19/03/2031	शुक्र	15/01/2032
केतु	16/01/2030	शुक्र	23/04/2031	सूर्य	14/02/2032
शुक्र	13/04/2030	सूर्य	04/05/2031	चंद्र	05/04/2032
सूर्य	08/05/2030	चंद्र	22/05/2031	मंगल	10/05/2032
चंद्र	21/06/2030	मंगल	03/06/2031	राहु	10/08/2032
मंगल	21/07/2030	राहु	05/07/2031	गुरु	30/10/2032
राहु	06/10/2030	गुरु	02/08/2031	शनि	03/02/2033
गुरु	14/12/2030	शनि	05/09/2031	बुध	01/05/2033
शनि	06/03/2031	बुध	05/10/2031	केतु	05/06/2033

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
08/01/2033		10/07/2033		06/12/2033	
10/07/2033		06/12/2033		24/12/2034	
सूर्य	17/01/2033	मंगल	18/07/2033	राहु	01/02/2034
चंद्र	01/02/2033	राहु	10/08/2033	गुरु	25/03/2034
मंगल	12/02/2033	गुरु	30/08/2033	शनि	24/05/2034
राहु	12/03/2033	शनि	22/09/2033	बुध	18/07/2034
गुरु	05/04/2033	बुध	13/10/2033	केतु	09/08/2034
शनि	04/05/2033	केतु	22/10/2033	शुक्र	12/10/2034
बुध	30/05/2033	शुक्र	16/11/2033	सूर्य	31/10/2034
केतु	09/06/2033	सूर्य	23/11/2033	चंद्र	02/12/2034
शुक्र	10/07/2033	चंद्र	06/12/2033	मंगल	24/12/2034

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
05/06/2033		05/12/2033		03/05/2034	
05/12/2033		03/05/2034		21/05/2035	
सूर्य	14/06/2033	मंगल	13/12/2033	राहु	29/06/2034
चंद्र	29/06/2033	राहु	05/01/2034	गुरु	20/08/2034
मंगल	10/07/2033	गुरु	25/01/2034	शनि	19/10/2034
राहु	07/08/2033	शनि	17/02/2034	बुध	13/12/2034
गुरु	31/08/2033	बुध	10/03/2034	केतु	04/01/2035
शनि	29/09/2033	केतु	19/03/2034	शुक्र	09/03/2035
बुध	25/10/2033	शुक्र	13/04/2034	सूर्य	28/03/2035
केतु	04/11/2033	सूर्य	20/04/2034	चंद्र	29/04/2035
शुक्र	05/12/2033	चंद्र	03/05/2034	मंगल	21/05/2035

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
24/12/2034		30/11/2035		08/01/2037		21/05/2035		26/04/2036		05/06/2037	
30/11/2035		08/01/2037		05/01/2038		26/04/2036		05/06/2037		02/06/2038	
गुरु	08/02/2035	शनि	02/02/2036	बुध	28/02/2037	गुरु	06/07/2035	शनि	29/06/2036	बुध	26/07/2037
शनि	03/04/2035	बुध	31/03/2036	केतु	22/03/2037	शनि	29/08/2035	बुध	26/08/2036	केतु	17/08/2037
बुध	21/05/2035	केतु	23/04/2036	शुक्र	21/05/2037	बुध	16/10/2035	केतु	18/09/2036	शुक्र	16/10/2037
केतु	10/06/2035	शुक्र	30/06/2036	सूर्य	08/06/2037	केतु	05/11/2035	शुक्र	25/11/2036	सूर्य	03/11/2037
शुक्र	06/08/2035	सूर्य	20/07/2036	चंद्र	08/07/2037	शुक्र	01/01/2036	सूर्य	15/12/2036	चंद्र	03/12/2037
सूर्य	23/08/2035	चंद्र	23/08/2036	मंगल	29/07/2037	सूर्य	18/01/2036	चंद्र	18/01/2037	मंगल	24/12/2037
चंद्र	20/09/2035	मंगल	15/09/2036	राहु	22/09/2037	चंद्र	15/02/2036	मंगल	10/02/2037	राहु	17/02/2038
मंगल	10/10/2035	राहु	15/11/2036	गुरु	09/11/2037	मंगल	06/03/2036	राहु	12/04/2037	गुरु	06/04/2038
राहु	30/11/2035	गुरु	08/01/2037	शनि	05/01/2038	राहु	26/04/2036	गुरु	05/06/2037	शनि	02/06/2038

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
05/01/2038		03/06/2038		04/08/2039		02/06/2038		29/10/2038		30/12/2039	
03/06/2038		04/08/2039		09/12/2039		29/10/2038		30/12/2039		05/05/2040	
केतु	14/01/2038	शुक्र	13/08/2038	सूर्य	10/08/2039	केतु	11/06/2038	शुक्र	08/01/2039	सूर्य	05/01/2040
शुक्र	08/02/2038	सूर्य	04/09/2038	चंद्र	21/08/2039	शुक्र	06/07/2038	सूर्य	30/01/2039	चंद्र	16/01/2040
सूर्य	15/02/2038	चंद्र	09/10/2038	मंगल	28/08/2039	सूर्य	13/07/2038	चंद्र	06/03/2039	मंगल	23/01/2040
चंद्र	28/02/2038	मंगल	03/11/2038	राहु	16/09/2039	चंद्र	26/07/2038	मंगल	31/03/2039	राहु	11/02/2040
मंगल	08/03/2038	राहु	06/01/2039	गुरु	03/10/2039	मंगल	03/08/2038	राहु	03/06/2039	गुरु	28/02/2040
राहु	31/03/2038	गुरु	04/03/2039	शनि	24/10/2039	राहु	26/08/2038	गुरु	30/07/2039	शनि	20/03/2040
गुरु	20/04/2038	शनि	10/05/2039	बुध	11/11/2039	गुरु	15/09/2038	शनि	05/10/2039	बुध	07/04/2040
शनि	13/05/2038	बुध	10/07/2039	केतु	18/11/2039	शनि	08/10/2038	बुध	05/12/2039	केतु	14/04/2040
बुध	03/06/2038	केतु	04/08/2039	शुक्र	09/12/2039	बुध	29/10/2038	केतु	30/12/2039	शुक्र	05/05/2040

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
09/12/2039		10/07/2040		23/03/2043		05/05/2040		04/12/2040		18/08/2043	
10/07/2040		23/03/2043		15/08/2045		04/12/2040		18/08/2043		10/01/2046	
चंद्र	27/12/2039	राहु	04/12/2040	गुरु	18/07/2043	चंद्र	23/05/2040	राहु	01/05/2041	गुरु	13/12/2043
मंगल	09/01/2040	गुरु	15/04/2041	शनि	03/12/2043	मंगल	05/06/2040	गुरु	10/09/2041	शनि	29/04/2044
राहु	10/02/2040	शनि	18/09/2041	बुध	06/04/2044	राहु	07/07/2040	शनि	13/02/2042	बुध	01/09/2044
गुरु	09/03/2040	बुध	05/02/2042	केतु	27/05/2044	गुरु	04/08/2040	बुध	03/07/2042	केतु	22/10/2044
शनि	12/04/2040	केतु	03/04/2042	शुक्र	20/10/2044	शनि	07/09/2040	केतु	29/08/2042	शुक्र	17/03/2045
बुध	12/05/2040	शुक्र	15/09/2042	सूर्य	03/12/2044	बुध	07/10/2040	शुक्र	10/02/2043	सूर्य	30/04/2045
केतु	24/05/2040	सूर्य	03/11/2042	चंद्र	14/02/2045	केतु	19/10/2040	सूर्य	31/03/2043	चंद्र	12/07/2045
शुक्र	29/06/2040	चंद्र	24/01/2043	मंगल	06/04/2045	शुक्र	24/11/2040	चंद्र	21/06/2043	मंगल	01/09/2045
सूर्य	10/07/2040	मंगल	23/03/2043	राहु	15/08/2045	सूर्य	04/12/2040	मंगल	18/08/2043	राहु	10/01/2046

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	7
8	भाग्यांक	6
1, 4, 8, 9	मित्र अंक	2, 3, 6, 7
3, 5, 6	शत्रु अंक	4, 5, 8
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मीन, सिंह	मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
सिंह, मकर, मीन	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
हनुमान	अनुकूल देवता	सूर्य
हीरा	शुभ रत्न	पुखराज
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
नीलम	भाग्य रत्न	माणिक्य
रजत	शुभ धातु	कांसा
रजत	शुभ रंग	पीत
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
सूर्योदय	शुभ समय	संध्या
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
चावल	दान अन्न	दाल चना
दूध	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

BHAVAYA GUPTA

जीवन रत्नः	हीरा	दम्पति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
कारक रत्नः	पन्ना	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	माणिक्य	भाग्योदय, सुख

RASHI GUPTA

जीवन रत्नः	पुखराज	कम खर्च, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	पराक्रम, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड्ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड्ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/08/1995-16/04/1998
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दाम्पत्य कलह
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती तृतीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती प्रथम ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती तृतीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती प्रथम ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती तृतीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/04/2073-04/08/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बदनामी
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसाय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

BHAVAYA GUPTA

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रुप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय -समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।

10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

RASHI GUPTA

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	मूषक	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	सिंह	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.00		

कुल : **24 / 36**

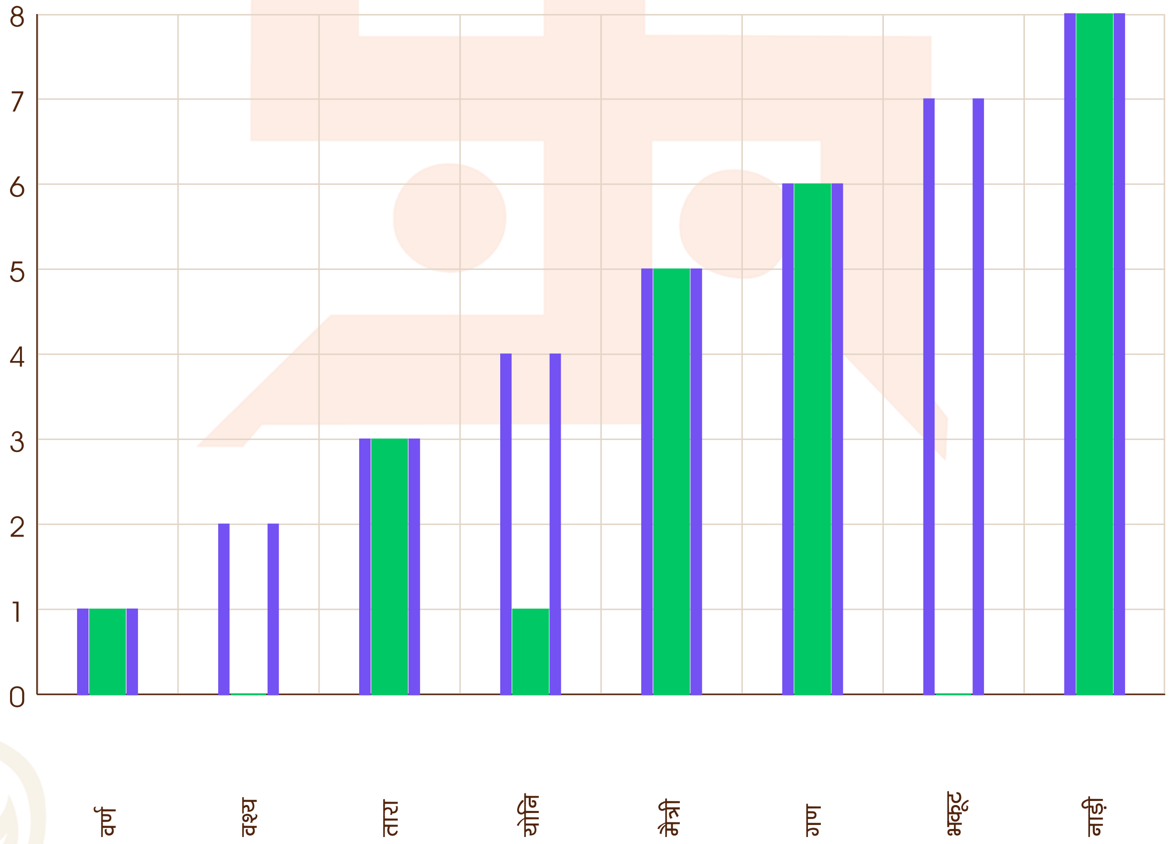

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

BHAVAYA GUPTA का वर्ग मूषक है तथा RASHI GUPTA का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

BHAVAYA GUPTA मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

RASHI GUPTA मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ष्;श्ध्दत्मजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल RASHI GUPTA कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु RASHI GUPTA कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु BHAVAYA GUPTA कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

BHAVAYA GUPTA तथा RASHI GUPTA में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

BHAVAYA GUPTA का वर्ण क्षत्रिय तथा RASHI GUPTA का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

BHAVAYA GUPTA का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं RASHI GUPTA का वश्य वनचर अर्थात सिंह (शेर) है अतः यह मिलान बहुत अशुभ मिलान है। शेर हमेशा मनुष्य के लिए संकट उपस्थित करता है। ये मनुष्य को हानि पहुंचाता है तथा घायल करते हैं व कभी-कभी मारकर खा भी जाते हैं। अतः यह मिलान उचित नहीं है क्योंकि BHAVAYA GUPTA हमेशा RASHI GUPTA से भय महसूस करेगा। RASHI GUPTA हमेशा BHAVAYA GUPTA पर हावी रहेगी, पति के ऊपर वर्चस्व स्थापित करेगी तथा अपने पति को अपनी हर आज्ञा के लिए बाध्य करेगी जो स्वीकार करने योग्य नहीं है क्योंकि इससे विकास एवं समृद्धि प्रभावित होगी। RASHI GUPTA हमेशा कोई न कोई समस्या उत्पन्न करती रहेगी जिससे घर एवं परिवार की शांति भंग होगी।

तारा

BHAVAYA GUPTA की तारा जन्म तथा RASHI GUPTA की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

BHAVAYA GUPTA की योनि श्वान है तथा RASHI GUPTA की योनि मूषक है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है।

कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में BHAVAYA GUPTA एवं RASHI GUPTA दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि BHAVAYA GUPTA एवं RASHI GUPTA के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण BHAVAYA GUPTA एवं RASHI GUPTA जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

BHAVAYA GUPTA का गण राक्षस है तथा RASHI GUPTA का गण भी राक्षस है। अर्थात RASHI GUPTA का गण BHAVAYA GUPTA के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण BHAVAYA GUPTA एवं RASHI GUPTA दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

भकूट

BHAVAYA GUPTA से RASHI GUPTA की राशि नवम भाव में स्थित है तथा RASHI GUPTA से BHAVAYA GUPTA की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। BHAVAYA GUPTA की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

BHAVAYA GUPTA की नाड़ी आद्य है तथा RASHI GUPTA की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। BHAVAYA GUPTA की आद्य नाड़ी तथा RASHI GUPTA की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

BHAVAYA GUPTA की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त धनु तथा RASHI GUPTA की राशि भी अग्नि तत्व युक्त सिंह राशि है। दोनों की तत्वों में समानता के कारण संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा । अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

BHAVAYA GUPTA की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा RASHI GUPTA की जन्म राशि का स्वामी सूर्य परस्पर मित्र राशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA के मध्य प्रेम सहानुभूति तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देने में तत्पर रहेंगे। वे एक दूसरे के गुणों की मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की सच्चे मित्र की तरह उपेक्षा करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन की सुख शांति बनी रहेगी तथा परस्पर सम्मान पूर्वक एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करके व्यवहार करेंगे।

BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष कहलाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी जिससे मानसिक परेशानी का भाव रहेगा। साथ ही अंहकार एवं उपेक्षा की भावना भी एक दूसरे के प्रति रहेगी जिससे आपसी संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। अतः यदि BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA परस्पर सामंजस्य की प्रवृति का पालन करें तथा एक दूसरे के साथ समान रूप से व्यवहार करें तो वैवाहिक जीवन में सुखद क्षणकी प्राप्ति हो सकती है।

BHAVAYA GUPTA का वश्य मानव तथा RASHI GUPTA का वश्य वनचर है। मानव तथा वनचर की नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA की अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं भी भिन्न रहेंगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

BHAVAYA GUPTA का वर्ण क्षत्रिय तथा RASHI GUPTA का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान रहेंगी तथा पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे फलतः इनका कार्य क्षेत्र सुदृढ़ रहेगा।

धन

BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA का जन्म एक ही तारा 'जनम' में हुआ है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट एवं मंगल का प्रभाव भी आर्थिक स्थिति पर सामान्य ही रहेगा। अतः अपने वर्तमान स्रोतों से परिश्रम पूर्वक धनऐश्वर्य की प्राप्ति होती रहेगी जिससे लाभ मार्ग सामान्यतया प्रशस्त होंगे तथा आर्थिक स्थिति से BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

BHAVAYA GUPTA को पैतृक सम्पति तथा जायदाद की प्राप्ति होगी। अतः आजीवन वे धन धान्य से युक्त रहेंगे तथा अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं परिश्रम से उसमें उतरोत्तर वृद्धि करने में समर्थ होंगे । इस प्रकार भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हुए वे अपना समय आनंद पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

BHAVAYA GUPTA आद्य तथा RASHI GUPTA अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुई हैं। अतः अलग अलग नाड़ी होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे परन्तु मंगल के प्रभाव से दोनों को समय समय पर शारीरिक कष्ट की प्राप्ति होती रहेगी। इससे दोनों गुप्त रोग या धातु संबंधी रोगों से परेशान रहेंगे तथा हृदय संबधी कोई कष्ट भी हो सकता है। BHAVAYA GUPTA की रतिक्रिया में शिथिलता रहेगी जबकि RASHI GUPTA की संभोग के प्रति उनके मन में उदासीनता का भाव रहेगा फलतः दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होगा। अतः इस प्रभाव की न्यूनता के लिए BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति के दृष्टि से BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको संतति की प्राप्ति उचित समय पर होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य जन्म का अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनके उचित पालन पोषण करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इनकी कन्या तथा पुत्र संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव काल के प्रति RASHI GUPTA के मन में अनावश्यक भय की भावना पहले से ही विद्यमान रहेगी जिससे वे मानसिक रूप से अशांति की अनुभूति करेंगी। अतः RASHI GUPTA को चाहिए कि ऐसी भय की भावना को मन से दूर करें क्योंकि उनका प्रसव बिना किसी विध्न या समस्या के सम्पन्न होगा तथा किसी भी प्रकार से प्रसूति संबधी चिकित्सा की उनको अनावश्यकता नहीं होगी साथ ही उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा सुदंर, स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ रहेंगी। फलतः इससे सास ससुर तथा पति उनसे प्रसन्न रहेंगे।

BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA बच्चों की उन्नति व्यवहार कुशलता एवं बुद्धिमता से प्रसन्न रहेंगे। साथ ही माता पिता की इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथा उनके सम्मान का हमेशा ध्यान रखेंगे। लेकिन माता की अपेक्षा पिता से उनका विशेष लगाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करेंगे। अतः BHAVAYA GUPTA और RASHI GUPTA का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

RASHI GUPTA के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके

विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। RASHI GUPTA भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा RASHI GUPTA भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का RASHI GUPTA को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

BHAVAYA GUPTA तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में BHAVAYA GUPTA के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से BHAVAYA GUPTA के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण BHAVAYA GUPTA के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।

अंक ज्योतिष फल

BHAVAYA GUPTA

आपका जन्म दिनांक 28 है। दो एवं आठ के योग से एक आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा आठ का शनि है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में आयेगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य जीवनदाता है एवं ब्रह्माण्ड में स्थिर ग्रह है। अन्य सभी ग्रह तो सूर्य के चक्कर लगाते हैं। अतः सूर्य ग्रह के प्रभाववश आप एक स्थिर प्रकृति के महत्वाकांक्षी, उदीयमान, प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में पहचाने जायेंगे। आप स्वतंत्र विचार धारा के धनी होंगे। पराधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। आप प्रत्येक कार्य को स्वतंत्रता पूर्वक निष्पक्ष संपादन करने के हिमायती रहेंगे। इससे आपको प्रतिद्वन्दियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप स्थायी एवं दीर्घ कालीन संबंध बनाने पर विश्वास करेंगे। आपकी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि जब भी आप किसी के साथ मित्रता, व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा प्रेम, रोमांस, इत्यादि के जो भी संबंध बनाऐं उनमें स्थायित्व रहे।

सूर्य जिस तरह प्रकाशित ग्रह है। उसी भाँति आप भी अपने जीवन में सदा प्रकाशित रहना पसन्द करेंगे। समाज वर्ग विशेष में मुखिया की भूमिका आप बखूबी निभाने की क्षमता रखेंगे। अपनी मेहनत के बल पर आप सभा-सोसायटी, संगठनों इत्यादि में प्रमुख पद को प्राप्त करेंगे।

अंक दो के स्वामी चन्द्र के कारण आपमें कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी। आप जो भी सृजन करेंगे उसमें मौलिकता रहेगी। अंक आठ का स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से कभी-कभी आपके अन्दर नैराश्य भाव जाग्रत होगा। आलस्य में वृद्धि होगी और बनते हुये कार्यों में रुकावटें आयेंगी।

RASHI GUPTA

आपका जन्म दिनांक 16 है। एक एवं छः के योग से आपका मूलांक 7 होता है । मूलांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून होता है। अंक एक का सूर्य तथा 6 का शुक्र है । इन तीनों ग्रहों सूर्य, शुक्र, केतु या नेपच्यून का प्रभाव आपके जीवन में निरन्तर चलता रहेगा। मूलांक 7 के प्रभाव से आपकी अभिरुचि ललित कलाओं में रहेगी। आपको गीत-संगीत, लेखन, काव्य, चलचित्र, दूरदर्शन इत्यादि में लगाव रहेगा।

कल्पनाशक्ति आपकी काफी अच्छी रहेगी। धन संग्रह में आपको कठिनाईयां आयेंगी इससे अर्थ के क्षेत्र में आप कमी महसूस करेंगी। घूमने-फिरने की शौकीन होने के कारण आप लम्बी यात्रायें करेंगी जिनसे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान आपके अन्दर काफी अच्छा रहेगा, जिससे दूसरों के विचार या बात को आप आसानी से समझ जायेंगी।

अंक एक एवं छः के स्वामी सूर्य, शुक्र ग्रह के प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी,

दृढ़प्रतिज्ञ, अडिग एवं सौन्दर्यबोध को समझने वाली होंगी। आप अपने जीवन में काफी संघर्ष करेंगी, लेकिन अन्त में संघर्षों पर विजय प्राप्त करेंगी एवं सफलता अर्जित करेंगी। आपको स्वच्छता अधिक पसन्द आयेगी एवं सभी वस्तुऐं करीने से सजी हों तथा घर ऑफिस में सुन्दर बैठक हो ऐसी आपकी मनोवृत्ति रहेगी। दूरस्थ देशों से आपको लाभ प्राप्त होगा। आप रोजगार-व्यापार में ऐसी लाइन का चुनाव करेंगी, जिसमें दूरस्थ देशों से निरन्तर सम्पर्क बना रहे तथा उनसे लाभ मिले। नेपच्यून, शुक्र एवं सूर्य के संयुक्त प्रभाववश आपको प्रारम्भ में संघर्ष करना पड़ेगा। पश्चात् मध्य अवस्था से अन्तिम अवस्था तक उन्नति की सीढ़ियां चढ़ती चली जायेंगी।

BHAVAYA GUPTA

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विघ्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

RASHI GUPTA

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगी। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगी। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण की शौकीन रहेंगी। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रही हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनती हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

लग्न फल

BHAVAYA GUPTA

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। आपके जन्म समय मेदिनीय क्षितिज पर वृष लग्न में मीन का नवमांश एवं वृषभ राशि का द्रेष्काण उदित था। उपयुक्त लग्न नवमांश के प्रभाव से आप जब मानवीय जीवन में प्रवेश किए अर्थात् बाल्यकाल से ही आपका जीवन अच्छे विचार से प्रारंभ हुआ। यथा उत्तम प्रकार का भोजन, उदार भावना, उत्कृष्ट साज-श्रृंगार पहनावा आदि अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करता है। आप काम शक्ति भावना से प्रेरित हैं, तथा आप अपनी संपत्ति को यथा संभव अखंडित एवं अपव्यय रहित धन कोष की वृद्धि के प्रति पूर्ण रूपेण सतर्क रहने का ज्ञान आप में विद्यमान है। आप धन की महत्ता को भलीं प्रकार जानते हैं, तथा धन संचयन को महत्व देते हैं। आप अपने धन का निवेश एवं व्यय के प्रति अत्यंत सतर्क रहेंगे। तथापि आपकी एक छोटी यह समस्या है कि अकस्मात् आप ठीक निर्धारित समय पर काम के प्रति आलस्य ग्रस्त हो जाते हैं, तथा शीघ्र ही उस कार्य को सुलभ और आसान समझ लेते हैं। आपको इस प्रकार की मनोवृति में बदलाव लाना अर्थात् दमन करना आवश्यक है।

यद्यपि आप सांसारिक सुखों से युक्त, धन से संपन्न एवं अत्यधिक सुसंस्कृत हैं। आप बहुत बड़े धार्मिक तथा धर्मस्थलों की यात्रा भी करते रहते हैं। आप अब तक निश्चित रूप से कई आंशिक यात्रा के क्रम में सामुद्रिक यात्रा करके बहुत व्यापाक रूप से मित्र बनाए हैं और बहुत मात्रा में देश और विदेश के क्षेत्रों में आपके कई घनिष्ट मित्र बन चुके हैं। वे लोग आपके कार्य-कलाप में मुख्य भूमिका निभाते हैं। आप भी उन मित्रों के साथ सहयोगात्मक भावना से यदा-कदा उनकी सहायता के लिए समय-समय पर निश्चित रूप से जाते हैं।

आप मध्यम कद के उन्नत ललाट एवं चमकीली आखों से युक्त हैं। आप अधिक समय तक सुंदर स्वास्थ्य से युक्त एवं आनंद प्राप्त करते रहेंगे। परंतु कुछ वर्षों के पश्चात् आपको स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उपस्थित होंगी। यथा मस्तिष्क ज्वर, कब्जीयत फोड़ा फुंसी एवं रक्त दोष से आशंत होंगे। आपको एक बार बीमार होने से परेशानी उपस्थित होगी कि आप दीर्घकालीन रोगग्रत होंगे तथा आपके दौर्बल्यता के कारण बेहोश भी हो जाया करेंगे, तथा आपको स्वास्थ्य लाभ की क्षमता सीमित मात्रा में रहेगी। अतएव आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें। अन्यथा इस प्रकार ऐसा संभाव्य है कि आप रोग से मुक्त नहीं हो सकेंगे। आपके द्वारा पसंद किया गया जीवन साथी के साथ पूर्ण रूपेण बहुत दिनों तक आनंद प्राप्त करेंगे। परंतु एक बार अपनी इच्छानुसार आश्वस्त होकर सामंजस्य कर लें तो जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

सामान्यतः आपको निर्देश है कि आपका प्रभाव बृष राशीय दृष्टिकोण से प्रभावित है अतः आपके लिए बृश्चिक, मीन, कन्या एवं मकर राशि के व्यक्ति अनुकूल रहेंगे। यदि आप इन राशि वालों से संबंधित रहे तों आपका भौतिकी जीवन सुखमय एवं मधुर रहेगा।

अंततः आप बहुत अधिक सचेत व्यक्ति हैं, अस्तु आपको निम्नलिखित विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है।

आप लाल रंग का उपयोग अपने जीवन में कदापि नहीं करें। क्योंकि यह रंग आपके लिए प्रतिकूल है। आपके लिए हरा, गुलाबी, एवं सफेद रंग जन्म प्रभाव से अनुकूल है।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

आपके लिए अंक 2 एवं 8 अंक पूर्ण रूपेण प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त अंक 7 एवं 8 अंक आपके लिए आकर्षक है। अंक-1, 3, 4 एवं 6 अंक आपके लिए निष्क्रिय दिन हैं।

RASHI GUPTA

आपका जन्म मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में धनु लग्नोदय काल हुआ था। साथ-साथ मिथुन नवांश एवं धनु राशीय द्रेष्काणा भी उदित था। ज्योतिषीय आकृति के अनुसार आपके जीवन की परियोजना से ऐसा दृश्य हो रहा है कि आप धन-धान्य से पूर्ण, स्वस्थ एवं प्रसन्नतम जीवन यापन करने वाली प्राणी है। निःसंदेह आप एक भाग्यशाली होकर उत्पन्न हुई हैं।

आप हर परिस्थिति में अपने पक्ष एवं अपनी भलाई की आकांक्षा रखती हैं। आपका व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रतिभा संपन्न है। आप एक संवादपटु, दिलचस्प, उच्चस्तरीय, विवेकी प्राणी हैं। आप निर्भिक प्रभावशाली एवं जनसामान्य की दृष्टि में सच्ची महिला हैं। यदि कोई अन्य व्यक्ति आपको गलत दिशा निर्देश कर आपकों मुश्किल में डालना चाहता है, तो आप भ्रमित नहीं होती क्योंकि आप एक प्रसन्नतम परिवारिक जीवन से युक्त हो।

एक अच्छी व्यक्ति इससे अधिक और क्या अभिलाषा कर सकती है। आप स्वास्थ्य की दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ्य रहेंगी। आपको व्यक्तिगत रूप से यह निर्देश है कि कुछ वर्षो के पश्चात जैसे वायु रोग गठिया, अल्सर, कफ, जुकाम, सर्दी तथा रक्तचाप जैसे रोगों से पूर्ण सत्तर्क रहे। यदि आप पूर्व में इन रोगों के प्रति यदि सत्तर्कता नहीं बरती तो आपको दुःखी होकर रहना पड़ेगा।

आप अपनी अच्छी उन्नति हेतु धर्म एवं दर्शन के प्रति दिलचस्पी लेकर संबंधित अच्छी भावनाओं से युक्त होकर गहन अध्ययन कर सकती हैं। क्योंकि जीवन एक दर्शन है तथा आप धार्मिक दान-प्रदान हेतु कुछ धन का सदुपयोग कर सकती हैं।

आप अपनी अवस्था के 27 वें वर्ष में अथवा 31 वें वर्ष में अकस्मात् महान धनी हो सकती हैं। अन्यथा उपरोक्त दोनों समय में से कोई दो वर्ष आपके लिए अत्यधिक लाभजनक समय रहेगा। इस समय आप संगठनात्मक सेमिनार एवं सामूहिक वाद-विवाद का अच्छा संगठनात्मक आयोजन करने की क्षमता प्राप्त करेंगी। आप स्वभावगत अतिरिक्त योग्यता के

अनुसार अपने भाषण के प्रभाव से लोगों को प्रभावित कर बुद्धिमानी में प्रवीणता प्राप्त कर लेंगी। यदि आप इस कार्य में अच्छी प्रकार उभर कर आऐं तो आपको यह आशा रहेगी कि आप आगे भी अपने कार्य में निश्चित सफलता प्राप्त कर सकती हैं। क्योंकि इससे मात्र आपका अस्तित्व ही नहीं बढ़ेगा बल्कि आपके विषय से संबंधित क्षेत्र भी विस्तृत होगा।

यद्यपि आप एक समझदार पत्नी एवं अच्छी संतान प्राप्त कर सर्व प्रकार से परिवारिक जीवन को मधुरतम एवं आनंददायक अनुभव करेंगी। क्योंकि आप छोटी-छोटी बातों को सोचकर क्रोधित हो जाती हो तथा शीघ्रता पूर्वक आपकी उत्तेजना का अंत हो जाता है। परिणामस्वरूप आप स्वतः अपनी गुस्ताखी का अहसास करती हो। आप इस प्रकार के वाह्य आक्रोश पर नियंत्रण रखें।

आपके लिये व्यवसायों में अनुकूल पेशा, वकालत, लेखक, वक्ता, राजनीति अथवा धार्मिक प्रचारक का कार्य उत्तम प्रमाणित होता है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में मंगलवार, गुरुवार, एवं रविवार का दिन बहुत उत्तम प्रमाणित होगा। शुक्रवार एवं शनिवार का दिन एकदम खराब है।

आपके लिए अंकों में महत्वपूर्ण अंक 3, 5, 6 एवं 8 अंक प्रभावशाली हैं। शेष अंक 2, 7 एवं 9 अंक त्याजनीय हैं।

आपके लिए अनुकूल रंग सफेद, क्रीम रंग, नारंगी, नीला, हरा एवं सूआपंखी रंग शुभता प्रदायक है। परंतु रंग लाल, मोतिया एवं काला रंग प्रतिकूल हैं।

BHAVAYA GUPTA

आपका जन्म मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, नाड़ी आद्य, योनि श्वान तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का शुभारम्भ "भ" या "भा" अक्षर से होगा- यथा भगत सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। इस चरण में जन्म लेने से जातक के लिए स्वयं अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इसकी शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे उस दिन जपे हुए नक्षत्र के दंशाश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से इसकी शान्ति करने के उपरान्त सम्बन्धित जातक को कोई भी कष्ट नही होता हैं तथा वह सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता हैं।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश
मानसागरी

आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर समाज में एक धनाढ्य पुरुष के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपको वाहन सुख की प्राप्ति भी होगी तथा आनन्दपूर्वक आप इसका उपभोग कर सकेंगे। शारीरिक बल से भी आप पूर्ण रुपेण युक्त रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि से किसी भी कार्य को सम्पन्न करेंगे शीघ्रता या चंचलता पूर्वक कार्य करना आपको पसन्द नहीं होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे तथा वे भी आपसे अत्यन्त भय ग्रस्त रहेंगे। विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा तथा समाज में विद्वान के रूप में यश प्राप्त करेंगे।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

आप एक वाक्पटु पुरुष होंगे तथा अपनी इस विशेषता से अधिकांश कार्यो को सिद्ध करने में सफल हो जाएंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा तथा यदा कदा समाज में अन्य जनों के समक्ष इसका आप प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी अधिकाँश बातों को प्रमाण के अभाव में अन्य लोग शीघ्रता से स्वीकार नही करेंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

आप आजीवन धन ऐश्वर्य तथा वैभव से सर्वदा समृद्ध रहेंगे तथा इनका आपके जीवन में अभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप दृढतापूर्वक कार्य करना पसन्द करेंगे अस्थिर होकर कार्य करने में आपको कोई आनन्द नहीं आएगा। आपके पास स्थिर वैभव भी रहेगा।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

RASHI GUPTA

आपका जन्म मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाडी अन्त्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मूषक, गण राक्षस तथा योनि मूषक होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "मु" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। यद्यपि तृतीय चरण के जातकों को इसका दोष नहीं होता तथापि सावधानी वश इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करवा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के 28000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो शास्त्रोक्त विधि विधान से जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करके शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ऴमीमवन्तः पितरोऽतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने पूर्ण जीवन काल में धनैश्वर्य से हमेशा सम्पन्न रहेंगी। आप सेवकों तथा नौकरों की स्वामिनी बनेंगी जो आपकी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। साथ ही आप समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का भी उपभोग करने वाली होंगी। देवताओं तथा माता पिता की आप प्रिय एवं आज्ञाकारिणी रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक महान उद्यमी महिला भी होंगी।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

आप अपनी माता पिता तथा पितामह की सेवा को हार्दिक श्रद्धा से सम्पन्न करेंगी तथा सुख और दुःख में हमेशा तन मन धन से इनका सहयोग करेंगी। आप के अधिकांश कार्य साहसपूर्ण होंगे तथा साहसिक कार्यो के प्रति आपके मन में विशेष उत्सुकता रहेगी फलतः आप पुलिस या सेना में कोई उच्चपद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। साथ ही राजकीय सेवा में भी आप तत्पर रहेगी।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।

चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

आप पल प्रतिपल अपने रूप को बदलने में चतुर होंगी। साथ ही उत्सवों के लिऐ आप अत्यधिक लालयित रहेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक इनका आयोजन करेंगी तथा अपना पूर्ण सहयोग अर्पण करेंगी। आप अपने ज्ञान तथा बुद्धि के बल से सामान्य जनता पर शासन करने वाली कोई उच्चाधिकारी भी हो सकती हैं।

बहुरुपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

आपके हृदय में कठोरता के भाव की प्रबलता रहेगी तथा दयाभाव अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगा। आपका स्वभाव प्रारम्भ से ही तेज से युक्त रहेगा। ज्ञानार्जन तथा विद्याध्ययन में आप पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करेंगी। आपकी रूचि पुण्य के कार्यों में रहेगी तथा पापकर्मो से हमेशा दूर रहेंगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी तथा शत्रुओं को वश में करना या पराजित करने में आप पूर्ण रूप से दक्ष रहेंगी। अभिमान का भाव भी कभी कभी आपके मन में उत्पन्न होगा तथा पति को वश में करने में आपको पूर्ण सफलता मिलेगी साथ ही समाज से आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

BHAVAYA GUPTA

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके कंठ एवं मुख की आकृति दीर्घ होगी तथा दान्त, कान एवं ओठ भी देखने में स्थूल रहेंगे। साथ ही दोनों भुजाएं कोमल तथा मांसल होगी। आप को पिता द्वारा प्रचुर मात्रा में धनादि की प्राप्ति होगी जिसका आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी लेखन कार्य में भी रूचि रहेगी तथा इसी सन्दर्भ में काव्य आदि सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी वक्तृत्व शक्ति अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी जिससे लोग आपकी बातों को ध्यान पूर्वक सुनेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप दक्षता का परिचय देंगे। चित्रकारी या शिल्प कला में आप विशिष्ट योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। आप प्रकृति से गम्भीर रहेंगे तथा धर्म के विषय में काफी ज्ञान स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। अपने भाई बन्धुओं से आपके संबंध औपचारिक ही अधिक रहेंगे। उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रेम तथा सम्मान सहित ही वश में किये जा सकेंगे। बल पूर्वक या आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नही किया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोलाकृति की तथा हाथ एवं कन्धे सामान्य से अधिक लम्बाई से युक्त रहेंगे। उम्र के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आप को पानी के किनारे निवास करना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। अतः इसके लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे। साथ ही हृदय से आप हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेंगी अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार मानेंगे तथा हृदय से उनका धन्यवाद भी करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप किसी न किसी प्रकार के कार्य में अपने को हमेशा व्यस्त रखेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न

रहेंगे एवं इसके द्वारा आपके काफी कार्य स्वयं ही सिद्ध हो जाएंगे। आपका अर्न्तमन त्याग की भावना से परिपूर्ण रहेगा। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा एवं साहसी प्रवृति से युक्त रहेंगे। आपके शत्रु प्रायः आपसे हारे हुए रहेंगे एवं आपसे भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग एवं धनाढ्य लोगों के प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण मान सम्मान प्राप्त होगा।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में निपुण रहेंगे। आपका चरित्र भी निर्मल रहेगा। आप हमेशा सत्य बोलने में विश्वास करेंगे तथा इसी प्रवृति का आप पालन करते रहेंगे। इसके साथ ही आप व्यय करने में अत्यन्त सावधानी का परिचय देंगे एवं आय के अनुसार ही व्यय करके अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। आप अपने परिवार में प्रधान एवं श्रेष्ठ रहेंगे। सभी परिवार जन आपको यथा योग्य सम्मान तथा स्नेह प्रदान करेंगे। आप विशेष रूप से इंजीनियरिंग या चित्रकला से क्षेत्र में विशिष्ट सफलता भी अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर पुरूष होंगे तथा सत्य का अनुपालन करने के लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के होंगे अतः स्थिर कार्य करना ही पसन्द करेंगे। आप में सत्व गुण की भी प्रधानता विद्यमान रहेगी एवं मन में अन्य जनों के प्रति स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा। किसी प्रकार से द्वेष या वैमनस्य का भाव रखना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। आप एक सुन्दर पुरूष होंगे तथा गुणवती एवं बुद्धिमती पत्नी के पति होंगे। नाना प्रकार के खेलों तथा नाटकों के प्रति आपके मन में रूचि रहेगी। आपका शरीर भी स्थूलता को प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप ऐसा कार्य सम्पन्न करेंगे जिससे आपके परिवार या कुल को परेशानी हो सकती है। लेकिन समाज में आप पूर्ण रूपेण लोकप्रिय रहेंगे।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वगुणों से सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज से पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। अपने अन्य भाई बहनों में आप श्रेष्ठ एवं मुख्य रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशिष्ट श्रद्धा का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा। आपकी गमनगति अत्यन्त ही आकर्षक रहेगी तथा सहनशीलता के भाव का सर्वथा अभाव रहेगा फलतः कई बार आपको हतोत्साहित भी होना पड़ सकता हैं।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरुपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा कष्ट तथा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभकार्य को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी।

यदि समय आपके लिए अशुभ चल रहा हो मन में परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं गुरूवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत वस्त्र, पीत पुष्प, पीत चन्दन, सोना, पुखराज , चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान से 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

RASHI GUPTA

सिंह राशि में जन्म लेने के कारण आपकी प्रकृति उग्र तथा तेज से युक्त रहेगी। आपकी मुखाकृति तथा मस्तक विशालता लिए होगा। आपके नेत्र छोटे तथा पीले रंग के होंगे। पर्वतों तथा वनों में सैर करना आपको प्रियकर लगेगा। कभी कभी आप बिना किसी कारण के शीघ्र ही क्रोधित भी हो जाया करेंगी। आप जीवन में मानसिक चिन्ताओं से समय समय पर चिन्तित रहेंगी। आपके मन में दानशीलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का समाज में आप प्रदर्शन करती रहेंगी। कभी कभी आप के अन्दर गर्व के भाव की भी

प्रबलता होगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपकी बुद्धि भी स्थिर होगी तथा अपने समस्त कार्यकलापों को शीघ्रता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप माता पिता के प्रिय एवं स्नेह की पात्र रहेंगी। आपकी संतति में पुत्र संख्या भी अल्प रहेगी।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकानननग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरूजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की हडिड्यां पुष्टता से युक्त रहेंगी। स्वभाव में तीव्रता का समावेश रहेगा। आप किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले अपने गले से एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकालने वाली होंगी। साथ ही आपका वक्षस्थल सुन्दर, विशाल तथा आकर्षक रहेगा। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने चारों तरफ की परिस्थितियों का गम्भीरता पूर्वक अवलोकन करके ही किसी कार्य को प्रारम्भ करेंगी जिससे आपकी सजग प्रवृति का ज्ञान होता हैं।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका हनुभाग स्थूल तथा मुखमंडल विस्तृत रहेगा। कभी कभी आप गर्व का भी प्रदर्शन करेंगी तथा पराक्रम से भी युक्त रहेंगी। माता की आप अत्यन्त प्रिय तथा उन्हें हार्दिक सम्मान प्रदान करने वाली होंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप अपने पेट भरने योग्य धनार्जन करके प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करने वाली होंगी तथा आपके स्वभाव में प्रारम्भ से ही क्रोध की मात्रा अधिक रूप में रहेगी। साथ ही वनों तथा पर्वतों में भ्रमण की उत्सुकता आपके मन में व्याप्त रहेगी। आप बन्धु तथा सेवक से भी युक्त रहेंगी।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।

जातकदीपिका

आपके हृदय में क्षमाशीलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी भी अपराधी को आप क्षमा करने की शक्ति से युक्त रहेंगी। आप अपने कार्यों को करने में सदा तत्पर रहेंगी तथा खाली बैठना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। आप हमेशा देश विदेश की यात्राओं में व्यस्त रहेंगी। शीत से आप प्रायः भयभीत रहेंगी। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान रहेंगे तथा स्वभाव भी आपका विनम्र होगा अतः सभी लोगों से आपको स्नेह तथा प्रशंसा की प्राप्ति होगी। आप कई प्रकार से व्यसनों को करने में भी तत्पर रहेंगी। लेकिन समाज में आप पूर्ण यश या कीर्ति प्राप्त करेंगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपके नेत्रों तथा शारीरिक बनावट सुन्दर एवं आकर्षक होगी। आप गम्भीर दृष्टि से युक्त तथा अपने सम्पूर्ण जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने वाली होंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, ववकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा ववकरण में कोई भी शुभ कार्य,व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि समय आपके लिए सर्वथा प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी पदोन्नति या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में रूकावट आ रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य भगवान को अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना करनी चाहिए। इसी के साथ रविवार का उपवास भी श्रेष्ठ रहेगा। साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गेहूं, रक्त पुष्प तथा धृतादि पदार्थो को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

BHAVAYA GUPTA

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरुष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

RASHI GUPTA

आपके जन्म समय में लग्न में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यता धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, सुन्दर, बलवान एवं शान्त प्रवृति के होते हैं परन्तु यदाकदा अभिमान के भाव का भी प्रदर्शन करते हैं। ये धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करके धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करते हैं। साथ ही आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत रहकर भौतिक सुखों का उपभोग करते हैं। इनके सभी कार्य नियमानुसार सम्पन्न होते हैं अन्य जनों को इन पर विश्वास होता है पर ये लोगों पर कम ही विश्वास करते हैं। दानशीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती है। राजनीति, कानून, गणित आदि विषयों में इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता अर्जित करते हैं। इन्हें प्रेम एवं स्नेह से ही वश में किया जा सकता है अन्य भौतिक प्रलोभनों से नहीं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं शक्तिशाली रहेंगी तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। आप अध्ययनशील महिला होंगी तथा विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित करने में सफल होंगी साथ ही कला एवं संगीत के प्रति भी आपका रुझान रहेगा। आप एक निश्चित आदर्श या उददेश्य की पूर्ति के लिए जीवन में संघर्षशील रहेंगी तथा अन्य लोगों से अनावश्यक द्वेष या ईर्ष्या की भावना नहीं रखेंगी। इससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। शत्रु एवं विरोधियों से भी आप उदारता का व्यवहार करेंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता बुद्धिमता एवं संघर्ष से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शान्त तथा संतुष्ट होंगी। आपका स्वरूप दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। शत्रु वर्ग को प्रभावित करने में आप समर्थ होंगी तथा वे आपसे भयभीत रहेंगे फलतः व्यापार कार्यक्षेत्र या प्रतियोगी परीक्षाओं में सामान्यतया सफलता ही अर्जित करेंगी। आर्थिक दृष्टि से आपके स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगीं।

आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा दानशीलता की प्रवृति के प्रभाव से समय समय पर अन्य जरूरत मंद लोगों की सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। इससे आपके समाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी। अच्छे कार्यों को करने की आपकी रूचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। धन एवं सुख के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा होगी तथा इनकी प्राप्ति के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों को समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगी। इससे आपको मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति होगी। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे आपको वाछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ, सुन्दर, बुद्धिमान एवं

पराक्रमी तथा विदुषी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम से सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपयोग करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

BHAVAYA GUPTA

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

RASHI GUPTA

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगी तथा अपने अधिकांश समय को अनावश्यक वार्तालाप में व्यतीत करेंगी। आप इतनी बातूनी महिला होंगी कि अन्य लोग आप पर आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकते हैं। आप आधुनिक विचारों से युक्त रहेगी तथा स्वभाव में विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आसानी से किसी को अपना मित्र नहीं बनाएंगी तथा खूब सोच समझकर जब किसी से पूर्ण सन्तुष्ट हो जाएंगी तभी उसे अपना मित्र बनाएंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा। लेकिन आंतरिक मन से परिवार के विषय में पूर्ण चिन्तित रहेंगी परन्तु प्रयत्क्ष में उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करेंगी। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो सकता है अतः ऐसी स्थिति में आपको सावधान रहना चाहिए फिर भी पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा उनकी प्रसन्नता तथा खुशहाली के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार के स्वादों की प्रिय रहेंगी तथा समय समय पर इनका आस्वादन करती रहेंगी लेकिन यदा कदा आपको नेत्र संबंधी रोग से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकरी या

अन्य साधनों से आप धनार्जन करेंगी साथ ही विदेश में भ्रमण आदि से भी लाभान्वित हो सकती हैं। इस प्रकार आप वैभव शाली जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

BHAVAYA GUPTA

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा मंगल भी मित्रराशि में चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेंगे। यद्यपि मंगल के प्रभाव से उसमें किंचित विलम्ब होगा अथवा कई बार परिश्रम अधिक करना पडेगा परन्तु स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं आपके पराक्रम से सांसारिक सुखों को प्राप्त करेंगे। आप समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में भी समर्थ होंगे।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति से आप युक्त होंगे तथा इसमें भी अचल सम्पत्ति की प्रधानता होगी अथवा सम्पत्ति में आप जमीन जायदाद या मकान आदि से युक्त होंगे अथवा इनके क्रय-विक्रय से जीवन में प्रचुर मात्रा में समृद्धि प्राप्त करेंगे । बधुजनों से आपको चल-अचल सम्पत्ति अर्जित करने में सहयोग की प्राप्ति होगी परंतु आपका अपना पराक्रम एवं परिश्रम ही इस क्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्रदान करेगा। इस प्रकार अपनी धनाढ्यता एवं ऐश्वर्य से अन्य सामाजिक जनों पर अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आपका युवावस्था के बाद गृह सुख उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने परिश्रम से गृह निर्माण करके आनंदपूर्वक उसमें निवास करेंगे। आपका घर अच्छी कालोनी में होगा परंतु पडोसियों से संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि उनके उपर आपका प्रभाव अवश्य रहेगा। इसके अतिरिक्त घर की साज-सज्जा एवं आकर्षण बनाए रखने के लिए आप तत्पर रहेंगे। आपको जीवन मेंउत्तम वाहन की भी प्राप्ति होगी।

आपकी माता जी तेजस्वी स्वभाव की बुद्धिमान एवं स्वाभिमानी महिला होंगी। परिवार के सदस्यों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा परंतु यदा कदा उनके उग्र स्वभाव से अन्य लोग उनसे किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते है। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा समयानुसार आपको नैतिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे एवं सुख दुख में माता का पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु आपसी संबंधों में यदा-कदा मधुरता के भाव में कमी आएगी। अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आप स्वभाव से ही परिश्रमी व्यक्ति होंगे। अतः विद्याध्ययन में आपकी रूचि प्रारंभ से ही होगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करके परिक्षाएं उतीर्ण करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अवश्य उतीर्ण करेंगे तथा इसमें आपको वांछित सफलता प्राप्त होगी। इससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा प्रियजनों एवं संबंधियों के मध्य प्रभाव में वृद्धि होगी जिससे आप आत्म संतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

जन्मकुंडली में चतुर्थ भाव से हृदय का विचार किया जाता है। अतः नैसर्गिक पाप ग्रह मंगल के प्रभाव से जीवन में आपको मध्यावस्था के वाद हृदय संबंधी परेशानी की अनूभूति

हो सकती है। साथ ही रक्त चाप संबंधी कष्ट की भी प्राप्ति होगी। अतः युवावस्था में ही ऐसे खाद्य एवं पेय पदार्थो का अधिक उपयोग नहीं करना चाहिए जिससे उपरोक्त परेशानियां उत्पन्न हों। यदि आप ऐसा करेंगे तो निश्चित ही रक्त चाप एवं हृदय संबंधी कष्टों से सुरक्षित रहेंगे।

RASHI GUPTA

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगी एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध महिला से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती हैं। स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करेने में समर्थ होंगी। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीध्र लाभ के योग बनते है। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से सफलताएं प्राप्त करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उतीर्ण करेंगी इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

BHAVAYA GUPTA

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

RASHI GUPTA

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी।

आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी तथा इससे आपको समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती रहेगी। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि से शीघ्र करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी कम ही रूचि होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान साहित्य तथा पाश्चात्य भाषा के अध्ययन में आप विशेष रूचिशील होंगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके एक विदुषी के रूप में स्वयं को समाज के सम्मुख स्थापित करने में समर्थ होंगी।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा ऐसे सम्बधों में आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम प्रसंगों में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी पालन करेंगी तथा यथार्थवादी दृष्टि कोण अपनाएंगी। यद्यपि आपका भावात्मक आकर्षण भी होगा लेकिन भावुकता के भाव में न्यूनता होगी तथापि आपका प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

केतु की संतति भाव में स्थिति के प्रभाव से संतति की प्राप्ति यथोचित समय पर होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता रहेगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वच्छन्द प्रवृति होने के कारण यदा-कदा उनका कहना कम ही मानेंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो को करने में उनकी सलाह कम ही लेंगे। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता पूर्वक कार्यो को सम्पन्न करने देने चाहिए जिससे उनका आत्म विश्वास बना रहेगा तथा आपसी सम्बन्धों में भी सदभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूर्ण देख-भाल करेंगे लेकिन आपको भी वृद्धावस्था के लिए कुछ न कुछ धन संचित करके अवश्य रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों से सुरक्षित रहेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही वे वांछित सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप भी उनकी शिक्षा का उच्चस्तर पर प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। आपकी संतति योग्य गुणवान एवं व्यवहार कुशल होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे आपके मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बच्चों पर आपको गर्व होगा। अतः जीवन में आपका संतति सुख अच्छा रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

BHAVAYA GUPTA

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रवृति धनवान एवं अधिक व्ययशील प्रवृति का मनुष्य होता है परन्तु शुभ ग्रह बृहस्पति के प्रभाव से वह विद्वान बुद्धिमान गुणवान तथा धर्म के प्रति श्रद्धा वाला होता है एवं धर्म या परोपकार संबंधी कार्यो में अधिक व्यय करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विदुषी बुद्धिमती एवं गुणवती महिला होगी तथा धर्म के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी फलतः धार्मिक कार्य कलाप समय समय पर होते रहेंगे। बृहस्पति के शुभ प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता की भावना भी होगी एवं सामाजिक तथा पारिवारिक जनों के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। साथ ही अपनी मृदुवाणी से भी लोगों पर प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा कद भी मध्यम होगा। उनका सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा एवं शरीर के अंग प्रत्यंग सुंदर पुष्ट एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी परन्तु आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। इसके लिए उन्हें नियमित रूप से व्यायाम या योगिक क्रिया करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उच्च साहित्य के अध्ययन के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर कलात्मक वस्तुओं के प्रति भी मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह अपने किसी श्रेष्ठ संबंधी या सम्मानीय व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न होगा जिससे आपको सन्तुष्टि होगी। विवाह के बाद आप एक दूसरे की भावनाओं का पूर्ण आदर करेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग देंगे। साथ ही कोई भी सांसारिक महत्व का कार्य आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा दाम्पत्य जीवन भी सुख पूर्वक व्यतीत होगा जो अन्य जनों के लिए एक उदाहरण भी हो सकता है।

आपका विवाह किसी उच्च तथा प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही उनसे नैतिक सहयोग आपको अवसरनुकूल मिलता रहेगा तथा सास ससुर के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा वे भी आपको पुत्रवत स्नेह प्रदान करेंगे जिससे संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। साथ ही अपनी मृदुवाणी से भी उन्हें प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सहव्यवहार से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ एवं अनुकूल

रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसके अधिक लाभ की संभावना रहेगी।

RASHI GUPTA

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृति का व्यक्ति होता है। साथ ही वह विद्वान् साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यो को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्यो को करने में दक्ष रहेंगे। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रूचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृति की भी व्यक्ति होंगे जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। अतः व्यायाम आदि की उन्हें सलाह देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगी तथा महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से

अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

BHAVAYA GUPTA

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही शनि भी स्वराशि में स्थित होकर दशम भाव में ही स्थित है। कुम्भ राशि एवं शनि दोनों वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

आपकी कुंडली में शनि योगकारक ग्रह होकर स्वग्रह में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

नवमेश-दशमेश शनि की दशम भावस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

दशमेश शनि की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता

होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

RASHI GUPTA

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। कन्या राशि पृथ्वी तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होगा परन्तु बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की भी इसमें प्रबलता रहेगी। आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक भी होंगी एवं परिश्रम पूर्वक कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रखेंगी।

आजीविका की दृष्टि से आप लिपिकीय कार्य, लेखक, कवि, चित्रकार, वास्तुकार, ज्यौतिषी, जिल्दसाज, शिक्षक, पुस्तक लेखक, यंत्र निर्माण कर्ता, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूतकार्य, टेलीफोन आपरेटर या दूरभाष विभाग तथा राजनीति में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के व्यक्तिगत सहायक के रूप में वांछित उन्नति सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। साथ ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, पुस्तक विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने कलात्मक वस्तुएं या वास्तुकला, वकालत, लेखाकार आदि के स्वतंत्र व्यवसाय एवं कार्यो से आप को इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी अतः उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य या व्यापार प्रारंभ करें।

जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी जिससे आपके समाज में प्रभाव में वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानीय पदाधिकारी या सदस्य के रूप में मनोनीत होंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रखेंगी।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चशिक्षा के लिए सदैव तत्पर होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा आप भी अपने परिश्रम ईमानदारी एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

BHAVAYA GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2026

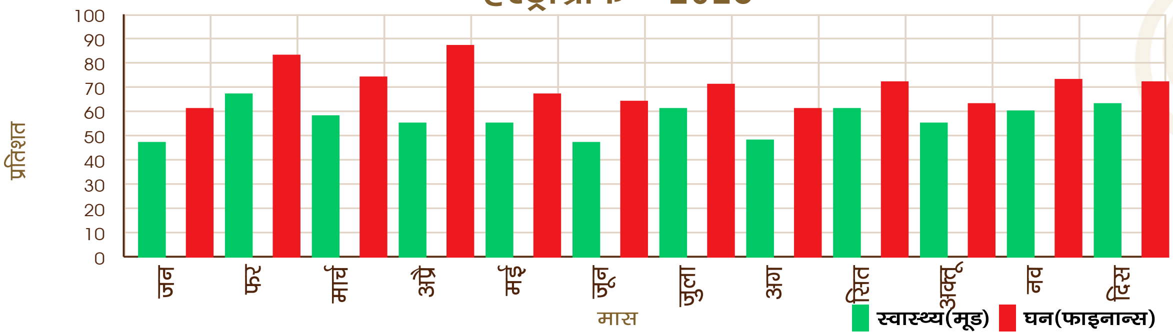

RASHI GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2026

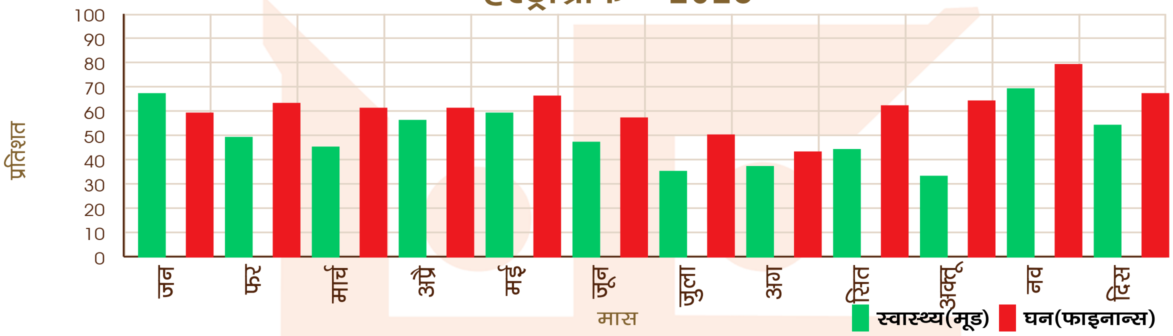

BHAVAYA GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2027

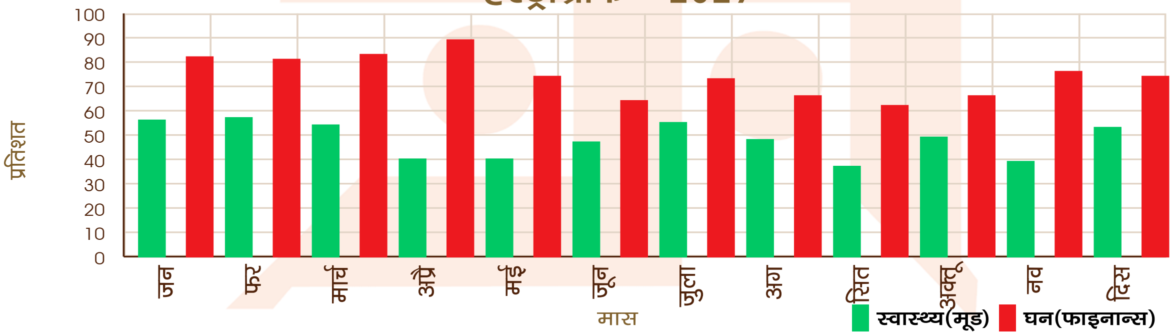

RASHI GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2027

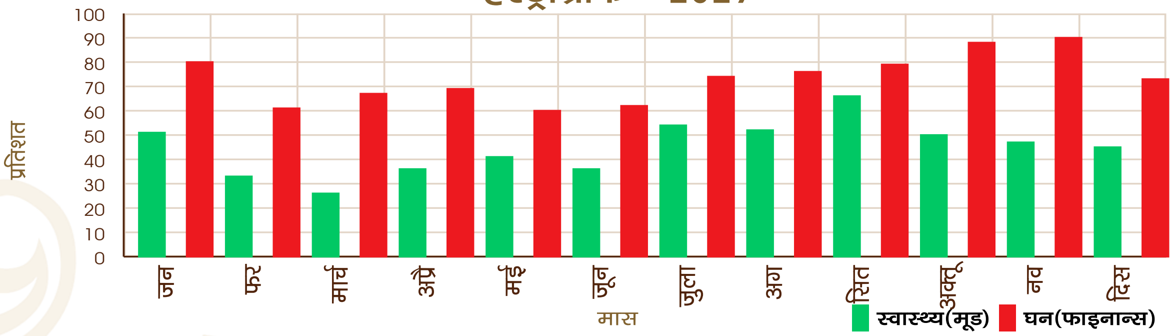

BHAVAYA GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2028

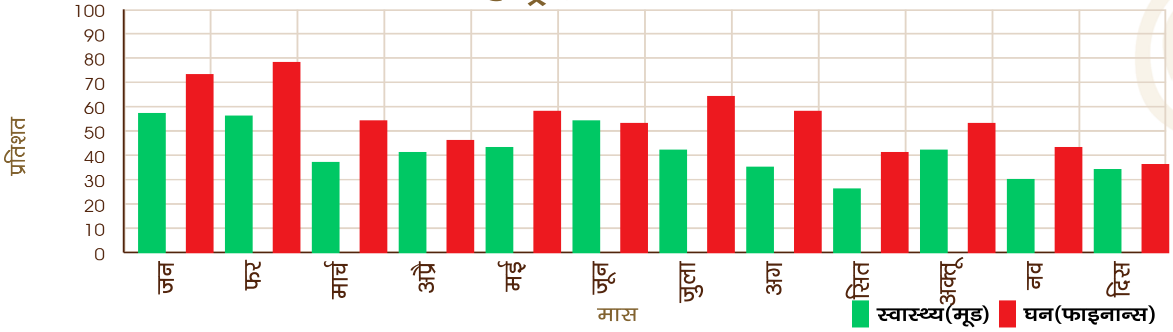

RASHI GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2028

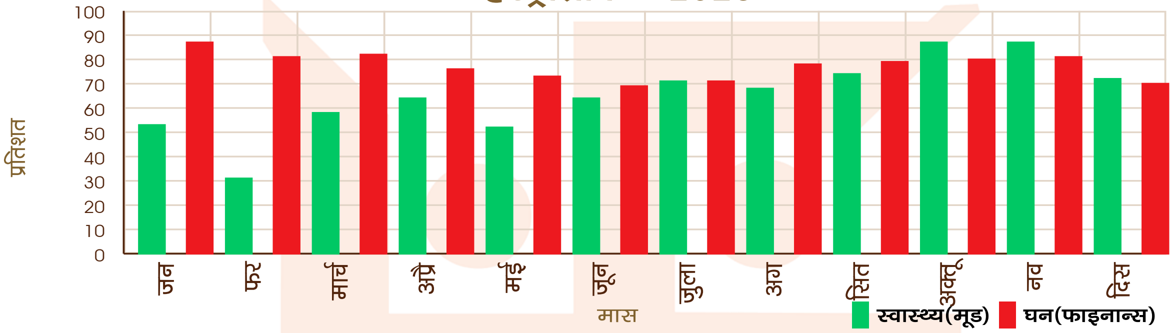

BHAVAYA GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2029

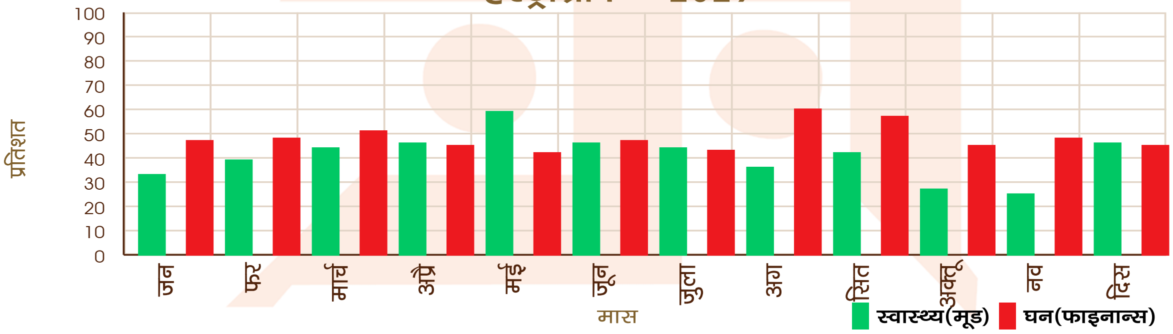

RASHI GUPTA
एस्ट्रोग्राफ - 2029

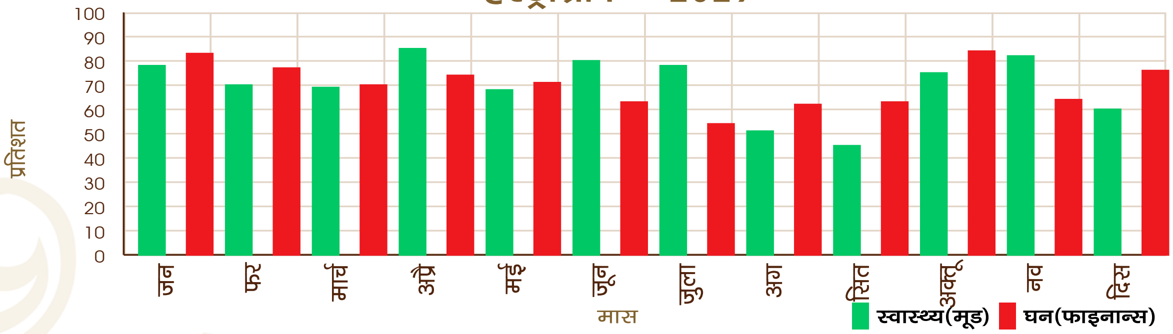

BHAVAYA GUPTA
एस्ट्रोग्राफ – 2030

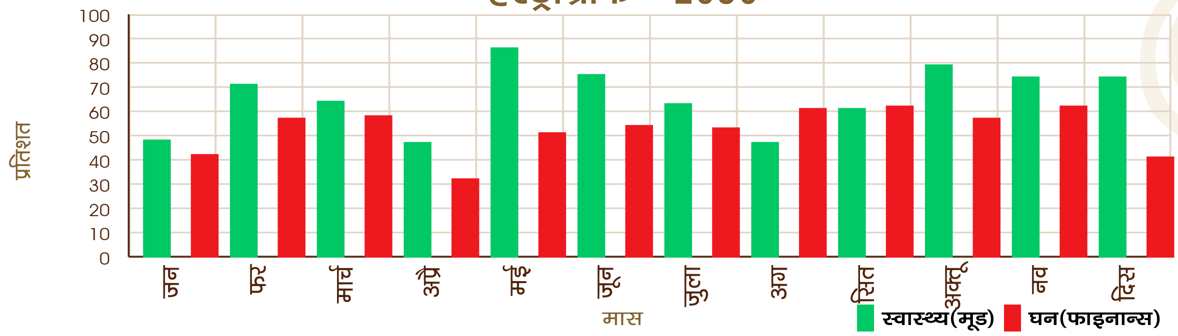

RASHI GUPTA
एस्ट्रोग्राफ – 2030

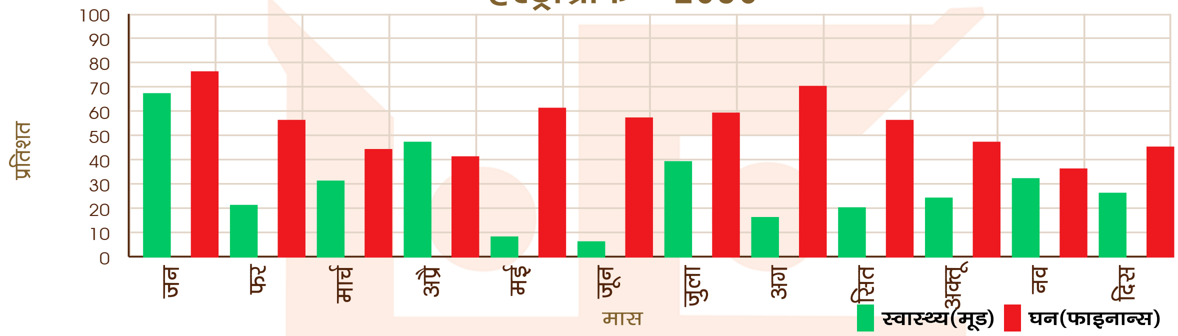

BHAVAYA GUPTA
एस्ट्रोग्राफ – 2031

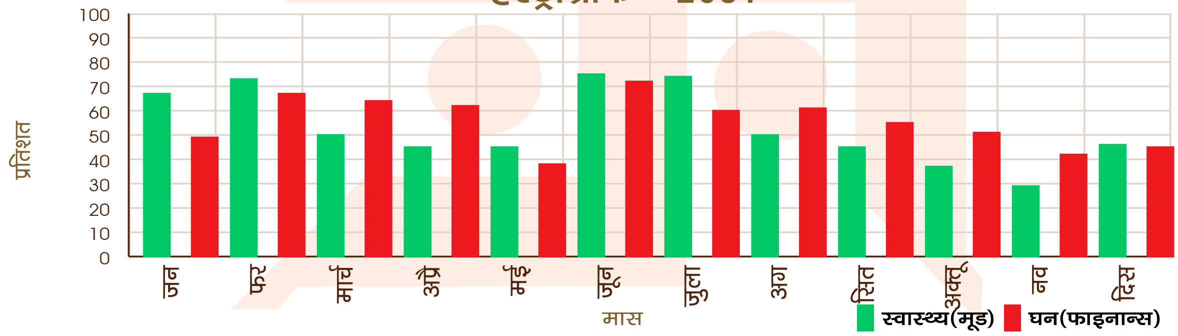

RASHI GUPTA
एस्ट्रोग्राफ – 2031